गुलसनोबर

قصہ گل و صنوبر

जिसमें

बारह कहानियों में रस और प्रेम की वार्त्ताओं का

वृत्तान्त भाषा और छन्द प्रबन्ध में वर्णन है

जिसको

रस रसिक विलासियों और प्रेमानुरागियों के

अनुरागार्थ

अवध देशीय बहराम घाट निवासी बाबू जीवाराम

जाट ने उर्दू से भाषा में उल्था किया

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के पाषाण यन्त्रालय में मुद्रित हुवा

माहमई सन १८७७ई०

देखकर सेना के समूह और व्यूह पलायमान होते और न्याय और देश के प्रबन्ध में तो अद्वितीय थे॥ एक दिन का यह वृत्तान्त है कि ज्येष्ठ पुत्र बादशाह के सन्मुख आय शीस नाय जय जीव कहि इस प्रकार प्रार्थना करने लगा कि हे तात इस दास का मन अतिमलीन रहता है जो आपकी आज्ञा पाऊं तो कुछ दिन घूमि फिर देशाटन कर फिर आकर आप के चरणों के निकट हाज़िर होऊं कदाचित इस घूमने फिरने से चित्त की उदासी जाय और मन का उच्चाटन दूर होवे॥

दो॰ मन मतंग मानें नहीं॥ कानन को अनुराग॥५
कोतिक शिख अंकुश करै ताहिन नेक लखाय॥५

यह सुन बादशाह ने उसकी बात अंगीकार की तब उसने शिकार करने वालों और पहलवानों को आज्ञा दी कि बाज, शाहीन, शिकरा, बहरी, स्याहगोश, चीते, ताजी, और पहाड़ी जानवर जितने कि शिकार करते हैं तैयार करो और आप बहुत से वीरों को जो शिकार की आखेट में प्रवीण और लौलीन थे साथ लेके जहां पर कि शिकार अधिकतर सेया उधर की ओर सिधारा, जब धीरे २ एक पर्वत के नीचे जो उंचाई में सुमेरगिरि के समान था जा पहुंचा तब एक ऐसा विचित्र मनोहर मृग दृष्टि पड़ा कि जिस के देखतेही बादशाहज़ादा आपही उसका शिकार बन गया और सम्पूर्ण आखेट कारों को आज्ञा दी कि देखो इस मृग पर कोई चोट मत चलाइयो यथा सामर्थ्य इसको सजीवही जाल में फसाइयो और जो कोई इसको सजीव पकड़ के मेरे पास लावेगा उसको पारितोषिक से परिपूर्ण करूंगा इस भांति सब को सचेत कर आपभी उसके फसाने की यत्न में

लगा जब मृग ने देखा कि चारों ओर से भागने की राह बन्द हो ती जाती है और आलस्य अवश्य जीव का घात किया चाहती है तब उसने ऐसी चौकड़ी भरी कि जाल से अलग निकल गया और उछलते कूदते बन की राह ली यह देख शाहज़ादे ने भी उसके पीछे अपना घोड़ा डाला और मृग के ऊपर दृष्टि लगाये चला ही गया निदान जब अपनी सेना से बहुत दूर निकल गया और दोपहर हो गया तब मारे उष्णता के शरीर पसीना से डूब गया और मारे तृषा के कण्ठ में कांटे पड़ गये परन्तु मृग का पीछा न छोड़ इतने में अचानक एक बालू का टीला दृष्टि पड़ा तिस पर हिरण को चढ़ते देखा पर वहीं से वह हिरण दृष्टि से लोप होगया फिर बादशा हज़ादे ने बहुतेरा घोड़ा दौड़ाया परंतु वह मृग दृष्टि न आया केवल शाहज़ादा उस बिकट बन में रह गया तब मारे भूख प्यास और गरमी के घोड़ा अति बिकल होगया तो बादशाहज़ादा उसकी बाग डोर पकड़ के आगे बढ़ा थोड़ी ही दूर में घोड़ा तो पृथ्वी पर गिर पड़ा और क्षणमात्र में मर गया बादशाहज़ादा अकेला रोदन करता हुआ आगे को चला थोड़ी दूर चल के एक उंचाई दृष्टि पड़ी तिसे चढ़ के देखा तो एक वृक्ष ऐसा ऊंचा देखा कि जिसकी जड़ पाताल शिर आकाश और कन्धा उसके चारों दिशाओं को ढके हुये हैं और उसके नीचे एक झरन पानी का कि जिस की स्वच्छता की उपमा के योग्य केवल अमृत और मिठास के लिये मिश्री और उस के आस पास की हरियाली को देख शुक पंख लज्जित होते थे यह देख बहुत हर्षित हुआ निदान ज्यों त्यों कर वहां पहुंचा और दो चार चुल्लू पानी पीकर चित्त संतुष्ट किया फिर परमेश्वर का धन्यवाद किया इतने में

अचानक एक सिंहासन बादशाहों के योग्य धरा हुआ दृष्टि पड़ा यह देख के बहुत विस्मित हुआ और इसी शोच में था कि इतने में एक मनुष्य सिढ़ी के भांत आता दृष्टि पड़ा जिस के चेहरे से सिढ़ाई औ बड़प्पन के चिन्ह विदित होते थे इसने देख के जाना कि कदाचित कोई ऋषि अथवा तपस्वी है जब निकट आया तो उसने पूछा कि हे जवान तू ऐसे विकट वन में कि जहां मनुष्य की तो कौन चलावे कोई पशु पक्षी भी नहीं कौन है क्या तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है तब बादशाह जादे ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त उस से कह के पूछा कि तुम कौन हो कहां के निवासी हो और ऐसी दशा से इस वन में बसने का क्या कारण है सो कृपा कर के कहो यह सुन के उस सिढ़ी ने कहा कि हे प्यारे मेरा समाचार न पूछ क्योंकि मेरा वृत्तान्त कहने की तो क्या वरण सुनने के भी योग्य नहीं है और जो मैं कहूं तो यह निश्चय है कि तुम भी मारे दुःख के विकल हो के रोने ही लगोगे और मेरे चित्त से जो दुःख की अग्नि का ज्वाला उठेगा तो मुझे महा कष्ट होगा परन्तु जब शाहजादा उस के पीछे ही पड़ा और उसने सत्य कहने के सिवाय अपना बचाव किसी प्रकार न देखा तब कहने लगा कि तू एक क्षण मेरे पास बैठ तो मैं अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहता हूं तू सुन ले कि जहांगीर शाह मेरा नाम है मेरे धन दौलत इतनी है कि जिसकी गणना नहीं राज्य निर्विघ्न और सात पुत्र परमात्मा ने मुझे सुशील औ रूपवान दिये थे ऐसे सुख से दिन कटता था कि दुःख शब्द का अर्थ भी न जानता था एक दिन का यह वृत्तान्त है कि बड़े पुत्र ने किसी पथिक से सुना कि चीन और तुर्किस्तान की सीवां पर तैमूस के पुत्र क्रयमूस शाह की पुत्री ऐसी है कि जिसके मुख को देख चंद्रमा मारे लाज के प्रति दिन घटने लगा और मारे शोक के मुख पर श्याम

ता छा गई चांदी को श्यामताई को निरख ना गिनि कें चुलि छोड़ बां
वीं में सटक गई कण्ठ की सुलाई निरख कपोत कलमलाने लगा,
आँखों की चपलता को देख मीन जल में पड़ी मृगी ने वन वास
लिया ओंठों की लाली लख विम्ब फल लज्जित हुआ नासि-
का को निरख तिल फूल ने मुख छिपाया कटि की कृशता को देख
केहरि ने वन वास किया जांघों की चिकनाई को देख केला ने क
पूर खाया ऐसी यह नौयौवना है कि जिसने इन सबों की शोभा
हीन किया केवल अद्वैत देश में है ॥

छन्द

यह रूप अनूप लख्यो जबसे। शशि पून्यो को हीन भयो तबसे
कहुं बोलत कोकिल शब्द सुन्यो तेहि कारण कानन शीस धुन्यो॥
जब दाड़िम रत्न की पंक्ति लखी। नहिं हीयो उघारत लाज रखी
कटि केहरि ताकत नागरि को। निज वास कियो हठि कानन को
लखि ओठ की लाली को विम्ब लजे यल गोल निहारि कपोत भजे
मृग मीन निहारत नयन सदा। वन नीरन को कवि कहत मुदा
एनूद न जानत सत्य यथा ॥ वकि दादुर खोयो जन्म वृथा
यह रूप प्रत्यक्ष धनन्तर को ॥ जेहि वारे के नयन उघारित को
चटम्तक शरीर में प्राण वस्यो जाको लट नागिनि कारी डसो

निदान उस के सिवाय और कोई स्वरूपवान स्त्री नहीं है और जब
से यह नौ यौवना युवा भई तभी से देश २ के राजकुमार उस के
साथ विवाह करने की इच्छा से आते हैं परन्तु आज तक किसी के
हाथ नहीं लगी क्योंकि उसने एक प्रश्न ही अपना दहेज निबन्ध
नियत किया है सो यह है कि गुल ने सनोवर के साथ क्या किया जो
कोई इस प्रश्न का उत्तर देगा उसी को अपना पति अंगीकार करके

विवाह करेगी हे जवान यह समाचार जब उस पथिक से सुना उसी समय से उसके विरह में बिन देखे भाले आशक्त होगया और मेरे पास आके रोया और उस के पास विवाह की इच्छा से जाने के लिये विदा मांगने लगा मैंने उसे बहुतेरा समझाया परंतु मेरी शिक्षा की औषधि उस विरह के रोगी को कुछ फल दायक न हुई वरण विरह और भी दूनी हुई यह दशा देख मैंने उस से कहा कि जो तुझे उस के साथ सुख विहार करने की इच्छा है तो मैं निज सेना लेके रूस को जाता हूं जो वहां का बादशाह अपनी बेटी को हंसी खुशी मेरे साथ कर देगा तौ तो भली भला है नहीं तो उस को जीत उस की बेटी को ले आऊंगा वह सुन के बादशाह जादे ने कहा कि हे तात अपने स्वारथ के लिये दूसरे को दुख देना अथवा किसी के देश को माटी में मिलाना अत्यन्त अनुचित है इस लिये मैं आपही वहां जाकर उस के प्रश्न का उत्तर दे उसका विवाह कर फिर आप के चरणों में हाज़िर हूंगा हे जवान कहावत यह प्रसिद्ध है कि करम रेखना मिटे करे कोई लाखों चतुराई क्योंकि जो कुछ छठी के दिन भावी ने भाल में लिखा है सो अमिट है उस में किसी प्रकार व्यतिरेक नहीं हो सक्ता उस की प्रारब्ध में तो यों ही लिखा था वह भला मेरी शिक्षा काहे को कान करने लगा निदान मैंने उसे जाने की आज्ञा दी शाहज़ादा मुझ से विदा हो कर उसके देश में पहुंचा वहां जब प्रश्न का उत्तर न दे सका तब गहरोज़ ने अपने कहने के अनुसार उस का शिर काट के अपने कोट के कंगूरों पर लटकवाया जब यह समाचार मुझे मिला तब मैं काले वस्त्र धारण कर शोक भवन में आ बैठा और महल में विलाप होने लगा इष्ट मित्र जितने थे सो सब अधीर होगये और दूसरे भाई उस के शोक में बावरे से बन रोने पीटने लगे जब उसका छोटा भाई शोक समीर का झकोरा न संभा

ल सका तो उसने भी महरंगेज़ से मिलने का मन में विचार किया अ-
न्त को वह भी अपने बड़े भाई की भांति जीव से हाथ धोय बैठा निदा-
न इसी भांति मेरे सातों पुत्र उस कुटिल के हाथ से मारे गये और कि-
सी से उसके प्रश्न का उत्तर न बन आया उस दिन से मैं अपने पुत्रों
के शोक से राजपाट छोड़ इस विकट बन में मारा २ फिरता हूं क्या
करूं मन को बहुतेरा समझाता हूं परन्तु माता पिता की डाह नहीं बु-
झती अब मुझे जीना अच्छा नहीं लगता पर मांगे मृत्यु भी नहीं
मिलती है पथिक मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्त यह है जिस कारण मैं बाव-
रा सा इस बन में फिरता हूं ज्योंहीं शाहज़ादे ने उस बावरे के मुख से प-
र वृत्तान्त सुना त्योंही उसके विरह में आसक्त हुआ ॥

चौ॰ मन मतंग नहिं आंकुश माने ॥ झपटि मूढ़ बन हीं को ताने ॥४
विह्वल भयो कहत नहिं बनै । को शिक्षक सम झावे मनै ॥
कहा करूं कैसे दुख मेटों ॥४॥ केहि बिधि वाको भुज भरि भेटों
कोई बैद्य हारि नहिं आवे ॥ जो आगद की औषधि लावे ॥
यहि कुरोग की औषधि नाहीं देख्यों करि विचार मन माहीं
बिन देखे वह रूप सलोना ॥ सुख सम्पति सब अधिक अलोना

दो॰ कहा करूं मन मूढ़ को ॥ नहिं मानत सिख एक ॥
बिन देखे वा कुटिल को तजै न अपनी टेक ॥४॥

दूसरी कहानी

शाहज़ादे के शिकार से फिरने और बादशाह को उस के
विरह के समाचार मिलने और शाहज़ादे को मह-
रंगेज़ के पास जाने और प्रश्न का उत्तर न
देने के कारण वध किये जाने के
विषय में ॥४॥४॥४॥

निदान इतने में सेना के मनुष्य जो पीछे रह गये थे सो चारों ओर से आ इकट्ठे होगये और एक बाजी जिसे वायु देख लज्जित हो मन के वेग से भी आगे जाने वाला शाहज़ादे की सवारी के लिये लाकर खड़ा किया शाहज़ादा सवार होकर अपने घर आया परन्तु महरंगेज़ के विरह का विषम ज्वर जो उसकी रग २ में व्याप्त होगया था उसी रोग के कारण दिन २ मन मलीन तन क्षीण विरह पीन होता जाता था निदान यह भेद सब छोटे बड़े को विदित हुआ और बादशाहज़ादा विरह के बनिज में व्योपारी ठहराया गया जो नौकर चाकर निशदिन सेवा में लौलीन रहते थे सो शाहज़ादे के समाचार बादशाह से कहने लगे कि महाराज महरंगेज़ नामक स्त्री जो शाह कैमूस की बेटी है उसके विरह में शाहज़ादा अति अधीर हो लाज छोड़ बैठा है यह सुन के बादशाह ने आज्ञा दी कि मेरी आज्ञानुसार एक पत्र महरंगेज़ के भेज देने के लिये उस बादशाह को लिखकर दूत को दे उस के साथ बहुत से ऊंटों पर देश २ की अपूर्व अनोखी अधिक मौलिक वस्तु बादशाहों के योग्य भेजी जावें जो इस बात को मान मेरी याचना पूरी करी तो यह सर्वोपरि है नहीं तो सेना लेके उस के देश को मटिया मेट कर उस कुटिल को ले आऊंगा जब शाहज़ादे ने बादशाह की यह सम्मति सुनी तब प्रार्थना की कि यह अनीति उचित नहीं है मैं आपही वहां जा कर उस के प्रश्न का उत्तर दे थोड़े ही दिनों में उसे अपने साथ ले फिर आय आप के चरणस्पर्श करता हूं आप मुझे केवल वहां जाने की आज्ञा दीजिये यह सुन बादशाह के मंत्री और सभासद बोले कि महाराज ऐसी न चाहिये शाहज़ादे का अकेला जाना हमारे निकट कुशल नहीं है क

शाचित यह अपने वचन का प्रति पालन करे तो इसको विराने देश में लज्जित होना पड़ैगा निदान उस विरही ने मारे अभिमान के ऊंटों पर बहुत से रत्न लदाय महरंगेज़ के देश की राह ली और थोड़े ही दिनों में कैमूस शाह के नगर में जा पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बड़ा भारी कोट बना है और उसके प्रत्येक कंगूरों पर अगणित शीस बादशाह और राजकुमारों के लटके हैं यह दशा देख यद्यपि उस के साथियों ने बहुतेरा समझाया कि हे शाहज़ादे अभी तेरा कुछ बिगड़ा नहीं है महरंगेज़ के मिलने का संकल्प मन से मिटा दे और इस विरह की हाट में अपने मरने का व्यापार मत कर क्योंकि तुझे तो मृत्यु के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा परंतु यह निश्चय है कि हम को पश्चात्ताप की मोट बांधनी पड़ैगी पर शाहज़ादे ने उनकी बात न मानी और नगर की रचना देखता हुआ आगे बढ़ा तो बाजार में क्या देखता है कि वणिक लोग सम्पूर्ण पदार्थ लिये कुबेर की भांति अति उत्तम २ वस्त्र पहने हुये दोनों ओर बैठे हैं निदान इसी भांति देखता हुआ राजद्वार में पहुंचा तो देखा कि एक रत्न जटित नक्कारा चोब सहित धरा है और उस पर सोने के पानी से यह लिखा है कि जो कोई इस नगर में आय महरंगेज़ को देखना चाहे सो इस नगारे को बजावे इस के शब्द के साथ ही बजाने वाले को महरंगेज़ अपने पास बुला लेगी शाहज़ादा उसको पढ़ते ही घोड़ा से उतर के तब भी बजाने को उद्यत हुआ उस समय भी शाहज़ादे के साथी संगी उसके जीव बचाने के लिये प्रार्थना करने लगे कि हे शाहज़ादे प्रथम हम को उचित है कि एक स्थान अपने रहने का निश्चित करके फिर इस काम के करने का उद्योग करें परंतु शा-

हज़ारे के हृदय में विरह की अग्नि ऐसी प्रज्वलित थी कि उस के सा-
थियों के वचन का जल उस को कुछ भी शीतल न कर सका व-
रण थोड़े पानी के पड़ने से और भी अधिक प्रज्वलित हुई तब
यों कहने लगा कि मैं कुछ इस नगर में रहने को नहीं आया हूं जो
कहीं रहने की जगह ढूंढूं अपना कार्य्य करके शीघ्र घर को लौट-
ना है इसलिये उचित है कि अपने आने के समाचार नगर
में विदित करैं यह कह चोब उठाय नगारे पर ऐसे बल से मारी
कि सब नगर निवासी चौकन्ने होगये बादशाह ने शब्द सुन
कर प्रति हारी को आज्ञा दी कि दुंदुभी बजाने वाले पुरुष को शी-
घ्र लाओ प्रति हार आज्ञा पाते ही दौड़े और शाहज़ादे को शा-
ह कैमूस के पास लेगये शाह कैमूस इस के रूप को देख के कहने
लगा कि हे पुत्र तू क्यों पानी पर भीत उठाने का अनुमान करता
है एक तो मेरी बेटी ही अपने रूप के घमंड से मग्न रहती है तिस-
का उत्तर देने वाला कोई आज तक न देखा सबों ने अपना सिर
कटा कर तमाशा देखा दूसरे तू भी हे पुत्र अयानों की भांति हठ
करता है यह बात भली नहीं है उचित यह है कि तू इस अनुमान
को मन से निकाल दे निदान बादशाह कैमूस ने बहुतेरा कहा पर
शाहज़ादे ने एक भी कान न किया और कहने लगा कि हे भीत
रत मुझे इसी में सुख है क्योंकि॥
चौ॰ मन हठ पस्यो न सिखै सिखावा चहत वारि पर भीति उठावा ॥
तब बादशाह ने कहा कि प्रथम तो हमारा यह काम है कि तेरी
पहुनाई करैं तत पश्चात तेरे मन आवे सो कीजियो यह कह-
न्योते की सम्पूर्ण सामान शाहज़ादे के पास भेज दी तिस पीछे
आप अपनी पटरानी गुलसुर्ख़ बेग़म को साथ ले अपनी बे-

ही मह्ररंगेज़ के पास जा कर इस प्रकार कहने लगा कि हे हत्यारी तैंने यह क्या अपने चित्त में ठानी हैं कि वृथा राज कुमारों की हत्या लेती है कि जिस पाप का प्रायश्चित्त भी नहीं ईश्वर के आगे क्या उत्तर देगी इस से उचित है कि इस हठ को छोड़ दे देख खावर देश का शाहज़ादा बहुत साधन ले के तेरे साथ विवाह करने की अभिलाषा से यहां तक आय पहुंचा है इस को अपना पति बना कर अंगीकार कर अब तुझ को माता पिता की आज्ञा उल्लंघन करना उचित नहीं है क्योंकि इस का भंग करना महा पाप है और जो तैंने प्रण किया है सो तो जो तू एक सहस्र वर्ष भी बैठी रहे तो भी इस प्रश्न का उत्तर देने वाला न रहैगा निदान इसी भांति उस की माता भी उसे समझाती रही पर उस कठोर चित्त ने अपने वज्र रूपी हृदय को किंचित नर्म न किया और रुख करके बोली कि हे माता यह तू क्या कहती है जो एक लाख वर्ष तक मुझे कोई न मिलेगा तो विवाह न करूंगी वरन कुमारी ही मर जाऊंगी निदान जब सूर्य अस्त हुआ तब मह्ररंगेज़ ने शाहज़ादे को अपने मकान में बुलवा के कहा कि हे शाहज़ादे मेरा यह प्रश्न है कि गुल ने सनोवर के साथ क्या किया शाहज़ादे ने कहा कि हृदय की बात तो एक ईश्वर को छोड़ के दूसरा कोई नहीं जानता जो कोई एक झूठी बात बना के तेरे सन्मुख कहै तो वह क्योंकर प्रमाणिक हो सकती है जब उस कुटिल ने अपने प्रश्न का उत्तर न पाया तो चाण्डाल को शिर काटने की आज्ञा दी उसने आज्ञा पाते ही धड़ पै से कद्दूक समान शीस अलग उतार लिया और की रके कंगूरे पर लटका दिया जब यह समाचार बादशाह लाल पोश को पहुंचा तब चालीस दिन तक शाहज़ादे के शोक में

राज काज छोड़ के बैठा रहा फिर थोड़े दिन बीते उस का भाई क-
हमास भी मारे लाज के अपने पिता से बिदा होकर महरंगेज़ के
पास गया और उसी भांति वह भी बध किया गया ॥

तीसरी कहानी

इल्मास रुह बख़्श का महरंगेज़ के देश में पहुंचना और उस
के बाग में जाके सिड़ी बन महरंगेज़ और दिलाराम के
चित्त को चुराय के उस से बिदा होने के विषय में ॥

निदान इसी भांति भ्रमशाद लाल पोश के छओं पुत्र मारे गये
तब सब से छोटा पुत्र जिस्को इल्मास रुह बख़्श कहते थे के-
वल शेष रहा यह पुत्र अत्यन्त धीर बीर गम्भीर स्थिर मधुशालि
और सब प्रकार की विद्याओं में निपुण था इसने एक दिन अ-
पने पिता को देखा कि अपने पुत्रों के स्मरण में रत्न जटित सिंहा
सन पर बैठा शोक समीर के झकोरा ले रहा है और नेत्रों से मेघ के
सदृश जल बर्षाय २ हृदय के दाह के दावा को सींचता है जब
इस ने बादशाह की यह दशा देखी तब अंजलि युक्त शीश नाय नि
कट आय इस भांति प्रार्थना करने लगा कि हे पिता कंमूस की
बेटी महरंगेज़ ने जो छः भाइयों को वृथा बध किया है मैं भी ज-
बतक उसे दण्ड न दूंगा तब तब मेरे मन की अभिलाष पूरी
न होगी इसलिये आप से यही प्रार्थना है कि आप दया करके
मुझे आज्ञा दीजिये जिस्में वहां जा कर जैसे बने तैसे छल ब-
ल कर उस कुटिल को ब्याहि लाऊं यह सुन बादशाह लाल
पोश ने कहा कि हे पुत्र अब केवल तू ही आंखों के सामने र-
हा है सो क्या तू भी अपना जी देने की सामान करता है शा-
ह ज़ादे ने उत्तर दिया कि हे पिता बड़ी लाज की बात है कि एक

तीन स्त्री के प्रश्न का उत्तर न बन आवे मैंतो जब तक अपने भाइ
यों का बदला उस नीच से न लेलूंगा तब तक सुख से न सोऊंगा
निदान ऐसी २ बातें कर पिता का समाधान किया और विदा हो
कर महरंगेज़ के देश में आ पहुंचा दो चार दिन में देखता भाल
ता उस के नगर में आ विराजा जब कोट के पास पहुंचा तब
सैकड़ो सिर शाह जादों के कंगूरोंपर लटके देखे उन में अपने भा
इयों के भी शीस देखे तो उन को पहिचान के बहुत रोया पर बस
न था देख कर रह गया फिर नगर के बाहर आया और किसी गां
व में एक किसान के घर गया और उस किसान की स्त्री जिस
की अवस्था एक सौ बीस वर्ष की थी परंतु उसने पुत्र का मुख न
हीं देखा था इस को देख कै अति प्रसन्न हो इस को अपना स्वप
न पुत्र बनाया शाह ज़ादे ने वहां का रहना अंगीकार कर घोड़े को
तो घुड़ सार में बांधा और बहुत साधन उन दोनो स्त्री पुरुषों को
दिया और कहा कि तुम को उचित है कि मेरे समाचार किसी
से विदित न करो निदान शाह ज़ादा रात को तो वहां रहा सवेरा हो
तेही नवीन वस्त्र पहिन महरंगेज़ के नगर में फिरने लगा और
इसी सोच में था कि इस के प्रश्न का उत्तर किस भांति दूं पर कुछ
भेद किसी से न खुला इसी भांति फिरते २ एक दिन यह शोचा कि
किसी भांति महरंगेज़ को देखना चाहिये क्योंकि उस कुटिल
के विरह में सैकड़ों बादशाह और शाह ज़ादे अपने जीवसे हा
थ धोय के चले गए हैं यही शोचता हुआ महरंगेज़ के द्वार पर
गया तो क्या देखता है कि एक बड़ा भारी वृक्ष द्वार पर लगा है
और अनोखी ही बनावट का द्वार बना है और कितने एक
द्वार पाल शस्त्र लिये वर्त्तमान हैं इसने बहुतेरा चाहा कि भीतर

जाय परंतु द्वारपालकों ने भीतर न जाने दिया तो अधिक चिंकत होके कहने लगा कि कदाचित् यह वही बाग है ईश्वर चाहे तो यहां ही मेरा मनोर्थ सिद्ध हो जाय यही सोचता था कि कोई ऐसी उपाय होती जिस के द्वारा बाग़ के भीतर जाऊं यह विचार परमेश्वर की वन्दना करने लगा कि हे जगत पावन कोई यत्न ऐसी बता जिसें मेरा मनोर्थ सिद्ध हो इतने में एक नहर दृष्टि पड़ी जिस्में होके बाहर से बाग़ के भीतर पानी जाता था यह उस को देख बहुत प्रसन्न हुआ और कपड़ा उतार पानी में डुब्बी मार जल के प्रवाह के साथ बाग़ के भीतर जा पहुंचा और वहां किसी कोने में बैठ अपने कपड़े सुखाए फिर वस्त्र पहन कर बाग़ में फिरने लगा कि जहां नाना वरण के फूल फूले हैं और वरण २ के पक्षी कोलाहल कर रहे हैं अधिक बड़ाई कहां तक करूं वह देखतेही बनता था कि जिसके आगे इन्द्र के उपवन को कुछ समता नहीं थी निदान शाहज़ादा घूमता फिरता उस जगह जा पहुंचा कि जहां महरंगेज़ बैठी थी शाहज़ादे ने जो दूरसे उसका स्वरूप देखा तो सत्य तो यों है कि ऐसा स्वरूप मनुष्यों में तो क्या परियों में भी किसी ने न देखा होगा उस के महल के आगे संगमरमर का फ़र्श उपमा रहित बना हुआ और एक हौज़ में जल भरा हुआ कि जिस की स्वच्छता के आगे बिल्लौर लज्जित होता था शाहज़ादा थोड़ी देर वहां ठहरा फिर जहां वहां बाग़ में फिरने लगा जब सन्ध्या हुई तब माली से छिप के रात उसी बाग़ में काटी जब प्रातःकाल को सूर्य्योदय हुआ तब शाहज़ादा बावरा बन के बाग़ में फिरने लगा इतने में कितक बागबान वहां किसी दृष्टि पड़ी और उसी जगह एक ठौर

पाटम्बर का बिछौना बिछाया हुआ देखा तिसै एक सिंहासन धरा है जिसै एक चन्द्रमुखी पूर्णमा के चन्द्रमा समान प्रकाशमान बैठी है और बालों की लटों में भंवर गुंजार कर रहे हैं शाहज़ादा ने अपनी बुद्धि से बिचारा कि हो नहो यही महरंगेज़ है ईश्वर ने इस को ऐसा रूप की राशि बनाया है तो क्यों न इस रस का प्राप्ति के मिलने को संसार का समुद्र उमड़े और रूप को देख मन क्यों न डामा डोल होय यह इसी सोच में था कि इतने में एक स्त्री सोने का गिलास लेके हौज़ से पानी लेने को आई और वही एक वृक्ष की ओट में से शाहज़ादा जो यह चरित्र देख रहा था उस की परछाईं जल में देख वह स्त्री मारे डर के सहम गई तो हाथ मेंसे गिलास गिर गया और रोती हुई उलटे पावों फिर गई तो उस की यह दशा देख दूसरी सहेली उस को महरंगेज़ के पास लेगई उसने पूछा कि कहु प्यारी तेरी यह कौन दशा है उस स्त्री ने उत्तर दिया कि मैंने किसी की परछाईं जल में देखी है कि ऐसा रूप देखने में नहीं आया है यह सुन के महरंगेज़ ने एक सखी को भेजा कि उसको देख कर मेरे शीघ्रही आवइ जो जा के देखे तो देखतेही मूर्छित हो गई और शिथिल अंग नेत्रों से नीर भरे महरंगेज़ के पास आय कहने लगी कि हे स्वामिन् यह नहीं मालूम पड़ता है कि किस की परछांई है पर हां इतना है कि मनको अपनी ओर आकरषण कर निज बस किया है यह सुन के महरंगेज़ को देखने की अधिक अभिलाषा हुई और अपने सिंहासन से उठ के हौज़ पर आई और उस परछाईं को देख के मोहित होगई और अपनी धाय को बुला के कहने लगी कि यहां

जाय परंतु द्वारपालकों ने भीतर न जाने दिया तो अधिक चिकत होके कहने लगा कि कदाचित् यह वही बाग है ईश्वर चाहे तो यहांही मेरा मनोर्थ सिद्ध हो जाय यही सोचता था कि कोई ऐसी उपाय होती जिस के द्वारा बाग़ के भीतर जाऊं यह विचार परमेश्वर की वन्दना करने लगा कि हे जगत पावन कोई यत्न ऐसी बता जिससे मेरा मनोर्थ सिद्ध हो इतने में एक नहर दृष्टि पड़ी जिस्से होके बाहर से बाग़ के भीतर पानी जाता था यह उस को देख बहुत प्रसन्न हुआ और कपड़ा उतार पानी में डुब्बी मार जल के प्रवाह के साथ बाग के भीतर जा पहुंचा और वहां किसी कोने में बैठ अपने कपड़े सुखाए फिर वस्त्र पहन कर बाग़ में फिरने लगा कि जहां नाना बरण के फूल फूले हैं और बरण २ के पक्षी कोलाहल कर रहे हैं अधिक बड़ाई कहां तक करूं वह देखतेही बनता था कि जिस के आगे इन्द्र के उपवन को कुछ समता नहीं थी निदान शाहज़ादा घूमता फिरता उस जगह जा पहुंचा कि जहां महरंगेज़ बैठी थी शाहज़ादे ने जो दूरसे उसका स्वरूप देखा तो सत्य तो यों है कि ऐसा स्वरूप मनुष्यों में तो क्या परियों में भी किसी ने न देखा होगा उस के महल के आगे संगमरमर का फ़र्श उपमा रहित बना हुआ और एक हौज़ में जल भरा हुआ कि जिस की स्वच्छता के आगे बिल्लोर लज्जित होता था शाहज़ादा थोड़ी देर वहां ठहरा फिर जहां तहां बाग़ में फिरने लगा जब सन्ध्या हुई तब माली से छिप के रात उसी बाग़ में काटी जब प्रातः काल को सूर्य्योदय हुआ तब शाहज़ादा बावरा बन के बाग में फिरने लगा इतने में कितेक वारांगणा वहां फिरती दृष्टि पड़ी और उसी जगह एक ठौर

पाटम्बर का बिछौना बिछाया हुआ देखा तिसै एक सिंहासन धरा है जिसै एक चन्द्रमुखी पूर्णमा के चन्द्रमा समान प्रकाश मान बैठी है और बालों की लटों में भंवर गुंजार कर रहे हैं शाहज़ादा ने अपनी बुद्धि से बिचारा कि हो नहो यही महरंगेज़ है ईश्वर ने इस को ऐसा रूप की राशि बनाया है तो क्यों न इस रस का प्राप्ति के मिलने को संसार का समुद्र उमड़े और रूप को देख मन क्यों न डामा डोल होय यह इसी सोच में था कि इतने में एक स्त्री सोने का गिलास लेके हौज़ से पानी लेने को आई और वही एक वृक्ष की ओट में से शाहज़ादा जो यह चरित्र देख रहा था उस की परछाईं जल में देख वह स्त्री मारे डर के सहम गई तो हाथ में से गिलास गिर गया और रोती हुई उलटे पावों फिर गई तो उस की यह दशा देख दूसरी सहेली उस को महरंगेज़ के पास लेगई उसने पूछा कि कहु प्यारी तेरी यह कौन दशा है उस स्त्री ने उत्तर दिया कि मैंने किसी की परछाईं जल में देखी है कि ऐसा रूप देखने में नहीं आया है यह सुन के महरंगेज़ ने एक सखी को भेजा कि उसको देख कर मेरे शीघ्रही आवह जो आ के देखे तो देखतेही मूर्छित हो गई और शिथिल अंग नेत्रों से नीर भरे महरंगेज़ के पास आय कहने लगी कि हे स्वामिन् यह नहीं मालूम पड़ता है कि किस की परछांई है पर हां इतना है कि मन को अपनी ओर आकर्षण कर निज बस किया है यह सुन के महरंगेज़ को देखने की अधिक अभिलाषा हुई और अपने सिंहासन से उठ के हौज़ पर आई और उस परछाईं को देख के मोहित होगई और अपनी धाय को बुला के कहने लगी कि यहां

कोई चित्त चोर है उसे ढूंढ़ के मेरे संमुख लावो कि उस के बिना
चित्त अतिही उदास है धाय उसकी आज्ञानुसार चारों ओर दे-
खने लगी तो एक जगह वृक्षों के कुंज में शाहज़ादे को पाया इ-
सने धाय को देख के भागने का अनुमान किया परन्तु भागने
का सावकाश न देखा तो बावरा बन गया धाय ने आके पूछा
कि तू कौन है कि जो तू हमारी स्वामिन का चित्त चुराय एक
कोने में छिपा हुआ बैठा है शाहज़ादा धाय से बावरों कीसी
बातें करने लगा धाय उसका हाथ पकड़ के शाहज़ादी के पा-
स लाई तो शाहज़ादी ने बहुतेरा पूछा कि तू कौन है और क-
हां से आया है शाहज़ादी उस चन्द्र मुख को देख चकोर के स-
मान दृष्टि लगाये रह गई शाहज़ादी ने बहुतेरा पूछा कि तू कौन है औ-
र कहां से आया है कहां जा गया शाहज़ादे ने बावरों की भांति प्रश्न
और उत्तर और इस प्रकार की बातें करने लगा और कहने लगा कि
मैं सुधावन्त हूं और मुझे किसी से कौन प्रयोजन है और कहूं क्या हि-
रन तो बकरी हो गया माखन की भैंस हो गई रोटी का पहाड़ पानी की
बौछाड़ से घुल गया पाले से मोम टिघल गया ऊंट को बिल्ली निगल ग-
ई छछूंदर ने बिल्ली को खा लिया देखो मेंढ़क उड़े जाते हैं समुद्र जला जाता है
निदान ऐसी ही उलटी सुलटी बातें करने लगा यह सुन के महर-
गेज़ कुढ़ने लगी कि हा बड़े खेद की बात है कि ऐसा स्वरूपवान
बावरा हो जाय देखो इस जगत ब्रह्मा के करतब सब उलटे ही हैं
कि सागर को खारी कल्पतरु को अफल चन्द्रमा कलंकी किया
है निदान महरंगेज़ शाहज़ादा का स्वरूप देख अधीर होगई थी
सब को बुला के कहने लगी कि यह मनुष्य बावरा है कोई इसको
न रोके जहां मन माने तहां जावे और जो मांगे सो इसे दीजियो

यह कह के अपनी सहेलियों को लेके अपने मकान को चली और चलती वेर शाहजादे से कहा कि हे बावरे इस स्थान से कहीं न जाना जो तुझे चाहिए सो सब इसी जगह तुझ को मिलेगा तब शाहजादा अपने मन में कहने लगा कि अभी इस कुटिल से उस प्रश्न का उत्तर पूछना भली बात नहीं है वरण उस की सहेली से जिस का नाम दिलाराम था जिसने प्रथमही मेरी परछाईं देख के बावरी हुई और अब तक मेरे विरह में विकल है उस से किसी ढब से पूंछना उचित है निदान वह तेरा शाहजादे ने चाहा परन्तु उस से पूछने का अवकाश नहीं मिलता था कि जिस्से उस से पूंछे दैव योग से एक दिन दिलाराम शाहजादे को अकेला पाय के उस के पावों पर शीस धर के बड़ी आधीनता से कहने लगी कि हे प्यारे तुझको जो ईश्वर ने रूपराशि दी है तो मैं भी विरह दरिद्रता वस तुझ से भीख मांगती हूं कि मेरे मन की अभिलाष पूरी करो और अपने भेद से सचेत कर कि तू कौन है और यहां किस भांति आया है इस के पूछने से मेरा यह प्रयोजन है कि तेरे रूप की गांसी ने मेरे मन रूपी कोयल घायल किया है कि अब मुझ में समझने की सामर्थ्य नहीं है इस लिये मेरी यह प्रार्थना है कि तू मुझे अपने साथ ले चल तो मैं अपने साथ इतना धन ले चलूंगी उस के आगे कुबेर की सम्पति भी थोड़ी है यद्यपि दिलाराम इस प्रकार की बातें करती थी तद्यपि शाहजादा मारे डर के कि ऐसा न हो इस भेद के खुलने से कोई आपदा भोगनी पड़े बावरों की सी बातें करता था शाहजादे की यह दशा देख दिलाराम अधिक सोच करने लगी और रात तो ज्यों त्यों कर काटी पर सबेरा होते ही फिर भंवर समान उस के कमल रूपी मुखार बिन्द के

रह के खार की आशावान हुई इतने में महरंगेज़ ने शाहज़ादे को अपने सन्मुख बुलाया तो दिलाराम छिप छिप के शाहज़ादे का चन्द्रमुख निरख २ अपने नैन चकोरों को सुख देने लगी इस बात को महरंगेज़ जान गई तब दिलाराम को अपने पास बुलाय के कहने लगी कि आज से इस बावरे की सेवा मैं तेरे को सौंपती हूं इस को किसी बात की तकलीफ़ न होने पावे यह सुन के दिलाराम बहुत प्रसन्न हुई और कहने लगी कि आप की कृपा से इस की मैं सब प्रकार सेवा करूंगी जब महरंगेज़ अपने घर गई तब दिलाराम शाहज़ादे को अपने घर में लाय दो चार बातें मन लगने के लिये कर फिर ईश्वर की सौगन्द देके कहा कि अब जो तू ईश्वर को मानता है तो मन का भेद मेरे सन्मुख कह तब शाहज़ादे ने कहा कि अच्छा मेरा मुख्य प्रयोजन तो यह है कि सनोवर ने गुल के साथ क्या किया जो तुझ को इस प्रश्न का उत्तर मालूम हो तो बता जिस के लिये तेरी शाहज़ादी महरंगेज़ अनेक शाहज़ादों की वृथा हत्या ले चुकी है और मैंने भी इसी लिये इतनी आपदा भोगी है यह सुन दिलाराम बोली कि अच्छा जो तू मुझे अपनी पटरानी बनावे और सदा मान मुझे माना करे तो निस्संदेह जितना मैं जानती हूं तुझे बताऊं यह सुन शाहज़ादा बोला कि हे प्यारी जो तेरी सहायता से मेरी अभिलाष पूरी हुई तो सदा तेरा रिणी रहूंगा और जो कहेगी सो करूंगा जब शाहज़ादा वचन दे ही चुका तब दिलाराम बोली हे प्यारे इस का यथार्थ भेद मुझे भी नहीं मालूम कि सनोवर के साथ क्या किया परन्तु इतना ही जानती हूं कि महरंगेज़ के तख़्त के नीचे एक जंगी रहता है उसी ने यह सम्पूर्ण वृत्तान्त महरंगेज़ को बताया और वह जंगी काफ़ से

भाग के आया है इसलिये तुझ को भी उचित है कि शहर वा क़ाफ़
की राह से नहीं तो किसी भांति तुझ पै यह विदित न होगा जब शा-
हज़ादे ने यह सुना तब प्रसन्न हुआ कि अब तो कुछ संतोष करना उ-
चित है परमात्मा चाहे तो सम्पूर्ण भेद खुलही जायगा अभी तो आ-
गे बहुत सी कठिनता है परन्तु वीर लोग जिस काम के करने का अनु-
मान करते हैं उसमें जो कांटे भी होंय तो उसे भी फूल कर मानते हैं
इतने में जब दिलाराम ने शाहज़ादे को बहुत शोच व गत देखा तब बो-
ली कि हे मित्र तू क्यों इतना शोच करता है जो तेरा अनुमान बहरोज़
के मारने का होय तो रात्री के समय सभा में मदिरा के प्याले के बदले
में विष का प्याला दूं कि फिर किसी भांति न जागे आगे यह सुन
के शाहज़ादे ने कहा कि हे प्यारी ऐसे धोखे से मार के बदला लेना
मनुसाई के विपरीत है जब तक शहर वा क़ाफ़ में जाके इस वृत्ता-
न्त को न जानूं गा तब तक मुझ विश्राम करना उचित नहीं है और
मैं तेरे साथ बन्धन बद्ध होता हूं जो ईश्वर चाहता है तो इस को शो-
ध के तेरे मन की अभिलाष पूरी करूंगा इसे तू निश्चय जानियो फि-
र दिलाराम से बिदा होय उस किसान के पास आय के कहने ल-
गा कि हे तात मैं विदेश जाने का अनुमान करता हूं तुम मन से कि-
सी बात की चिन्ता मत कीजियो ॥

चौथी कहानी

शाहज़ादे का दिलाराम से बिदा होने और पीर रोशन
ज़मीर का शहर वा क़ाफ़ की राह दिखाने और
लतीफ़ा बानू के जादू डाले शाहज़ादे को
हिरण होजाने के विषय में ॥✱॥

इस कहानी कहने वाले ने इस भांति से कही है कि शाहज़ादा बो-

डे पर सवार होके शहर के बाहर निकल शहर बा काफ़ की ओर चला परंतु यह नहीं जानता था कि शहर बा काफ़ कहां है और कौन सी राह में होके उस शहर को जाना चाहिये इसी शोच के मारे दिन अति हीन होता जाता था अन्त को ऐसा बल हीन होगया कि घोड़े पर बैठने की सामर्थ्य नहीं रही तब घोड़े की बाग डोर हाथ में ले पैदल चलने लगा इतने में एक अतिही वृद्ध पुरुष स्वेत दाढ़ी हरित वस्त्र धारण किये हाथ में छड़ी लिये अचानक दृष्टि पड़ा शाहज़ादे ने उस को देख के दण्डवत करी और उसने भी आशीर्वाद देके पूछा कि हे जवान तू कौन है और कहां से आता है और कहां जाने का विचार है शाहज़ादे ने कहा कि मैं पथिक हूं और शहर बा काफ़ को जाने का विचार है पर यह नहीं जानता कि वह शहर कहां है और राह कौन सी है उस वृद्ध पुरुष ने शाहज़ादे की ओर देख के कहा कि हे जवान तू इस राह में पांव मत धर क्योंकि यह बात अति कठिन है जो सम्पूर्ण आयुर्बल इसी खोज में बिता देगा तो भी पता न पावेगा इसी भांति उस वृद्ध ने बहुत सी बातें शिक्षा की रीति से कहीं पर शाहज़ादे ने एक न मानी तब उस वृद्ध ने पूछा कि तुझ को कौन ऐसी विपत्ति पड़ी जिस के दुःख के मारे जीव जाने को कुछ मन में नहीं धरता शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि हे स्वामी मुझे एक ऐसा काम है कि जिस के बिना किये चित्त अति मलीन रहता है इसलिये जो आप उस शहर की राह जानते हो तो दया करके बता दीजिये पुण्य की बात है जब उस वृद्ध ने देखा कि किसी भांति यह अपना हठ नहीं छोड़ता तब कहा कि हे जवान शहर बा काफ़ काफ़ में है और बालुहि सम्बन्ध रखता है और जिन्न लोग वहां निवास करते हैं जब तू शहर के बाहर पहुंचेगा तो एक दुराहा मिलेगा वहां से तू दाहने ओर

की राह लीजियो बांईं ओर को भूल के न जाइयो और दिन रात की राह मत जाइयो और जब प्रातःकाल होगा तब तुझ को एक मीनार दृष्टि आवेगा उस पर एक संगमरमर की पट्टी में जो कुछ लिखा है सोई कीजियो उसके विपरीत न कीजियो शाहज़ादे ने यह बात मानी और उस वृद्ध को दण्डवत कर आशीर्वाद ले बिदा हुआ और दिन रात के अन्तर में उस मीनार के पते पर जा पहुंचा तो क्या देखता है कि ऊंचाई में सुमेरु गिरि से भी ऊंचा है तिस पै एक पट्टी संगमरमर की जड़ी है और उस में यह लिखा है कि पथिक को उचित है कि दाहिनी ओर की राह अंगीकार करे तो आनन्द से कुशलपूर्वक ख़ुरासा काफ़ में पहुंचेगा और जो बांईं ओर की राह में होके जायगा तो थोड़ी सी कठिनता है पर उस से शीघ्र पहुंचेगा और बीच राह ऐसी कठिन और भयदायक है कि किसी भांति सजीव बचने का भरोसा नहीं परन्तु उन दोनों से इस राह के द्वारा शीघ्र पहुंचेगा यह पर परमेश्वर को दण्डवत की और कहा कि जल थल में केवल तू ही रखवारा है मैं केवल तेरी सहायता के भरोसे पर इस कठिन राह से चलता हूं

चौ॰ मैं अनाथ बिछुर्‌यों या बन में। तो सम हितू और नहिं जग में
इष्ट मित्र नाहिं बंधु गुसांईं ॥ सब को सबदा तुही सहाईं।
का सों निज मन को दुख कहों। ताप दुःख के निज तन दहों॥
देखो सब बन कंटक भरयो ॥ तापर पांव जात नहिं धरयो
अगणित दुःख लखों भांति श्यामा तो बिन कौन सवारे कामा॥

निदान इसी भांति परमात्मा से आधीनता मांग कर एक मुट्ठी धूल लेके अपने बदन पै छोड़ कहने लगा कि तू ही अब मेरे वस्त्र और कफ़न है और घोड़ा पै चढ़ बीच की राह ली एक रात दिन के पीछे

एक बन ऐसा दृष्टि पड़ा कि उस बन के वृक्ष मानों आसमान से बा-
तें कर रहे हैं और उस बन में एक बाग़ हरा भरा देख के शाहज़ादा उ
सी ओर चला तो देखा कि उस बाग़ का द्वार संगमरमर से बना है औ
र उस के द्वार पर एक हब्शी ऐसा काला कि जिस को देख कोयल
काक और भौरों की भी विचारी हारी और श्यामता की परछाईं
से सम्पूर्ण बाग़ काला हो रहा है बैठा है और ऊपर को ओठ नासि
का से भी ऊंचा उठा है और नीचे का ठोढ़ी तक लटकता है और
एक चक्की के पाट के समान पत्थर जो तौल में सौ मन के लगभग
होगा ढाल की तरह एक अनार के वृक्ष में लटका है और एक ख
ड्ग कि तौल में पचास मन लोहे से अधिक ही होगा दूसरे वृक्ष में ल-
टकता है और वह कितने ही जंतुओं की खाल को पहरे और एक
आहनी जंजीर कि जिस की प्रत्येक कड़ी में हाथी झूमा करें कमर
में बांधे द्वार से तकिया लगाये सोता हुआ देखा शाहज़ादे ने उसके
पास आके घोड़ा अपना बांध के परमेश्वर का स्मरण करके
बाग़ के भीतर चला वहां फिरता २ अचानक एक चमन के पास
आ निकला तो वहां की वायु अति सुगंध दायक और वृक्ष बहुत
सुहावन लगे और वहां बहुत से हिरन चर रहे थे कि जिन के सींग
रत्नों से मढ़े हुए और जरबफ़्त की झूलें उन के ऊपर पड़ी हुईं
और उन के गले में रुमाल सोने के तारों से कढ़े हुये बंधे हैं निदा
न प्रत्येक हिरण ऐसा शोभायमान दृष्टि पड़ा कि जिस के देख ने
से भूख प्यास दूर हो जाय द्विष्ट पड़े शाहज़ादा यह देख के अतिही
विस्मित हुआ कि हे भगवान यह क्या आश्चर्य है कि इस बाग़
में कोई माली और रखवाला दृष्टि नहीं आता और जितने हिरण
चरते हैं सबके सब शाहज़ादे को सुख और प्यारों से इशारह करते

थे कि यहां न आ परन्तु शाहज़ादे ने यह बात कुछ मन में न धरी व·
रण मन में विचारा कि ये हिरण मुझे देख के कलोलें कर रहे हैं निदा·
न सैर करता हुआ एक महल के पास पहुंचा कि जिस के आगे केस·
र का मकान सज्जित होता था और रंग में जी में अद्वैत तिसे एक बे·
हक संग मरमर की बनी हुई तिसे फ़र्श बिछा हुआ था शाहज़ादा ए·
क झरोखा की राह से उस के भीतर गया तो देखा कि एक स्त्री ऐसी
स्वरूपवान सिंहासन पर बैठी है कि जिस के आगे पूर्णिमा का·
चन्द्रमा मुख छिपाता है आंखों की घुलाई चंचलाई को देख
मृग मीन खंजनादि बनबन भागे फिरते हैं और एक दरीची के
बाहर शीस निकासे चारों ओर को देख रही है ज्यों हीं उस की दृष्टि
शाहज़ादे पर पड़ी त्योंहीं लतीफ़ाबानू का अंग शिथिल होगया और
अधीर हो के अपनी धाय को बुला के कहा कि इस युवा पुरुष को मे·
रे पास ले आ तो इस से पूछूं कि यह कौन है धाय आज्ञानुसार शाह
ज़ादे के पास आके कहने लगी कि तुझ को हमारी स्वामिन बुलाती
है यह सुनतेही शाहज़ादा उस धाय के साथ हो लिया वहां जाय के
देखा तो जाना कि मानो अमरावती यही है कि जहां तहां
पाटम्बर के बिछौना बिछाये हैं और एक सिंहासन रत्न जटित ध·
रा है तिसे लतीफ़ाबानू बैठी है जब शाहज़ादा उस के पास पहुंचा
तब बड़े हर्ष से आके उसने शाहज़ादे का हाथ पकड़ के अपने पास बै·
ठाल के पूंछा कि हे प्यारे तू कौन है और कैसे आया और कहां
जाने का विचार है तब शाहज़ादे ने अपना आद्योपान्त वृत्तांत
उस से कह सुनाया तो लतीफ़ाबानू बोली कि हे जवान जो तू
चाहे तो कैमूस शाह को उस की बेटी महरंगेज़ समेत तेरे पास मंग·
वाऊं और जो तेरे मन की अभिलाष है सो सब पूरी करूंगी पर अब

तू यह धन्य मान कि परमात्मा ने तुझे यहां पहुंचाया और मुझ सी चम्पक बरनी तुझे मिली तब शाहज़ादे ने कहा कि यह तो सच है पर इस बात पै तेरे साथ बन्धन बन्द होता हूं कि जब तक यह भेद जान महरंगेज़ को घोड़ों की टाप के नीचे न खुंदवा डालूंगा तब तक सृष्टि का बिषय भोग मुझ को बर्जित है हां जब इस काम से छुट्टी पाऊंगा तो निस्संदेह तेरे मन की अभिलाष पूरी करूंगा निदान लतीफा बानू ने बहुतेरी उस से मीठी मीठी बातें की पर शाहज़ादे ने अपनी हठ न छोड़ी तब उस ने यह बात मन में सोची कि किसी भांति इस को मदिरा पान कराऊं जिस से इस की मति भ्रष्ट हो तो महरंगेज़ की ओर से कुछ क्रोध शान्त हो और मेरी बात सुने उस समय अपने मन की अभिलाष पूरी करूं यह मन में विचार मदिरा मंगाया और प्याला भर शाहज़ादे को दिया शाहज़ादे ने कहा कि प्रथम यह आप को पीना उचित है फिर मैं पीऊंगा लतीफा बानू ने शाहज़ादे के कहने से मदिरा का प्याला अपने ओठों से लगाय दूसरा प्याला भर के शाहज़ादे को दिया उसने उसे पी लिया फिर गाने बजाने का आरम्भ हुआ और ऐसी २ मीठी तानें सुनाने लगी कि उस समय जो बैजू बावरा होता तो बावरा हो जाता और तानसेन अपनी तान को भूल जाता निदान ऐसी सभा बन पड़ी कि सम्पूर्ण मकान गूंजने लगा और जितने सभा में आये हुए थे सब का मन मोह गया ऐसी दशा में लतीफा बानू को काम ने और भी अधिक सताया पर शाहज़ादे से कुछ बस न था तीन दिन तक इसी भांति सभा में बैठा मदिरा पान करता रहा चौथे दिन शाहज़ादा उठ के लतीफा बानू से कहने लगा कि अब दया कर के मुझे बिदा कीजिये क्योंकि मुझे बहुत दूर जाना है और तेरी प्रीति

की रस्सी में मैं तो बंधा ही हूं ईश्वर की कृपा से जब मैं अपना काम कर चुकूंगा तो तेरी अभिलाष पूरी करूंगा जब लतीफा बानू ने देखा कि शाहज़ादा किसी भांति मेरे फन्दे में नहीं आता तब अपनी धाय से कहा उस ताख में से वह माजूम ले आ कि जिस के खाने से चित्त प्रसन्न और लतीफ़ा वश होता है थोड़ी सी शाहज़ादे को खिलाऊं धाय आज्ञा पाते ही ले आई लतीफ़ा बानू ने थोड़ी सी उस में से शाहज़ादे को दी शाहज़ादे ने ज्योंहीं खाया कि अचेत होगया तब लतीफ़ा बानू ने एक लकड़ी मंत्र पढ़के शाहज़ादे के कंधों पर ऐसी मारी कि शाहज़ादा चिल्लाने लगा और घूम के गिर पड़ा थोड़ी देर में शाहज़ादा हिरण हो गया तब लतीफा बानू ने सोनार को बुलाय के उस के सींगों में सिंगोटी जड़वाई और एक रूमाल जादू पढ़ के उस के सींगों में बांध दिया और ऊपर झूल उढ़ा के उन्हीं हिरणों की ओर को हांक दिया यद्यपि शाहज़ादा हिरण बन गया था परंतु बुद्धि और स्वभाव उसी भांति का बना था जब अपने को हिरण के स्वरूप में देखा तब मन में कहने लगा कि हे भगवान यह बीच में तैंने कौन आपदा में डाला है अब अवश्य जीव गया क्योंकि न तो अब कोई यत्न इस बाग से बाहर निकलने की दृष्टि पड़ती है और जो निकला भी तो बाघ चीता ही खाय जायगा निदान किसी भांति अब छुटकारा न मिलेगा इसी भांति शोचता हुआ उन्हीं हिरणों के झुण्ड में जा मिला॥

पांचवीं कहानी

जमीलाखातूं परी से शाहज़ादे को पूर्व स्वरूप मिलने और जमीलाखातूं से तीर कमान और अंगुश्तरी सुलेमानी लेके बिदा होने और राह में बाघ से मिलने और मैदान सफ़ा में पहुंचने और शाहज़ादे की बि-

रह में जमीलाखानूं के विकल होने के विषय में ॥

निदान इसी शोच में बाग़ में चरता फिरता था कि इतने में इस बा रह दिन बीते तो एक दिन फिरता २ एक ओर बाग में जा निकला तो बाग की भीति वहां पर नीची देखी तो बाग से निकलने के अनु मान से उछल के बाहर आया पर जब देखा तो उसी ठौर पै अप ने को देखा इसी भांति कितने एक बेर कूदा परंतु बाग ही में रहा तब मन में शोचा कि क्या चित्र यह बाग भी माया के परपंच से बना है इसी कारण से बाहर नहीं जा सक्ता अन्त को हार के एक ओर को चला तो उस में एक क्यारी ऐसी देखी कि जिसें पहुंचते ही मारे सुगंध के चित्त प्रसन्न हो गया वहां धीरे २ कुछ दूर चल के एक भा रीरस दृष्टि पड़ा उस में से बड़े परिश्रम से बाहर निकला तो दूसरा बाग़ दृष्टि पड़ा कि जिस में अनेक प्रकार के सुगंध दायक पुष्प दूर दूर दृष्टि पड़े यह देखता हुआ आगे बढ़ा तो एक मकान बड़ा भारी दृष्टि पड़ा कि जिस में हजारों खिड़की लगी थीं परन्तु सब बन्द ही देखीं और प्रत्येक क्यारी उस बाग की देखने में इन्द्र की फुलवाई के सदृश थी शाहज़ादा यह शोचता था कि देखिये परमात्मा यहां क्या दिखाता है फिर आगे बढ़ा तो एक खिड़की खुली हुई देखी कि जिस में एक चन्द्रमुखी रत्न जटित सिंहासन पर बै ठी उस खिड़की में मुख निकाले बाग़ की शोभा को देख रही है कि जिस की शोभा से सम्पूर्ण बाग जगमगा रहा है और केशों की सु गंध के लोभ से भृंग गूंजि रहे हैं इतने में उस चन्द्रमुखी की दृष्टि अचानक इस पर पड़ी तब तो यह अपने मन में ऐसा डरा कि क हीं इस के पास कुत्ता बैठा हो तो मेरी मृत्यु हो जावे इसी शोच में था कि जब उस चन्द्रमुखी ने कि जिस का नाम जमीला खातूं था इस

हिरण के सींगों में रत्न जड़े हुए देखे तो जाना कि कदाचित्
यह हिरण किसी का पालतू है आंख बचाय के भाज आया
है इस को किसी ढब से पकड़ना चाहिए यह सोच के अपनी
धाय को बुला के इस हिरण के पकड़ने की आज्ञा दी वह हरी
घास ले के उस को दिखाने लगी इस को तो फसना चाही भूखे
पशुओं की भांति उस की ओर को चला जब निकट आया
तो धायने उस के गले की डोरी पकड़ के जमीला खातूं के
पास ले गई वह उस को देख मकान से उतर के उस के पास
आई और जड़ाऊ भंवर कली और रेशम की डोरी उस के गले
में देख के समझी कि यह हिरण किसी धनाढ्य का है वहां से छूट
के भाग आया है निदान जमीला खातूं उस हिरण की डोर प-
कड़ के अपने घर में ले आई और अपने बैठका में उसे बैठाल के
अच्छे २ मेवा उस के आगे धरे इस ने मारे भूख के पेट भर के खाया
और पानी पी के भली भांति तृप्त हुआ और अपना सीस जमी-
ला खातूं की जांघ पर धर के सोने लगा तो वह चन्द्रमुखी भी उस
की ढिठाई से प्रसन्न हुई और अपना कमल सा हाथ उस के ऊपर
फेरने लगी फिर अपनी धाय से कहा कि एक रेशम की डोरी ले आ
वह आज्ञा पाते ही डोरी ले आई तब उस डोरी में हिरण को अप-
ने सिंहासन के पाए में इस विचार से बांधा कि जिस में सोते सम-
य अलग न हो इतने में एक संग उस के आंखों से आंसू बहने ल-
गे तो धाय ने जमीला खातूं से कहा कि आप का हिरण रोता है
देखो बड़े आश्चर्य्य की बात है कि पशु इस प्रकार से रोदन कर-
ता है यह नई बात सुन जमीला खातूं चट से हिरण के पास आ-
ई तब हिरण खातूं के पावों पर सीस रख के और भी अधिक.

रोने लगा तब खातूं उस के ऊपर हाथ फेर के कहने लगी कि हे प्यारे तू क्यों रोता है मैं तो तुझे अपने प्राणों से भी अधिक चाहती हूं तब तो वह और भी सीस उस के पैरों पर धर के रोने लगा तब उसने अपनी बुद्धि से जाना कि यह काम लतीफा का है कि यह बहुधा मनुष्यों को पशु बना के बन्द में रखती है यह विचार कर कहा कि अच्छा अब तू मत रो मैं अभी तुझे मनुष्य बनाये देती हूं यह कह के धाय को आज्ञा दी कि ताख़ में से माजूल का डिब्बा उठा ला वह आज्ञा पाते ही डिब्बा उठा लाई तब जमीला खातूं ने स्नान करके नवीन वस्त्र पहरे और उस हिरण को भी स्नान कराये और थोड़ी सी माजूल उस में से हिरन को दी वह खाते ही अचेत हो गया तब उस ने एक छड़ी अपने तकिये के नीचे से निकाल झाड़ पढ़ के उस के कंधे पर मारी हिरण चक्कर खा के गिर पड़ा और लोट पोट मनुष्य हो गया और जड़ाऊ सींग और रूमाल जो रत्नों से जड़े थे वे अलग हो गये तब शाहज़ादे ने परमात्मा को बारम्बार धन्यवाद किया और जमीला खातूं से कहने लगा कि तेरी दया से अब मनुष्य हुआ हूं न तो मेरी सामर्थ्य इतनी है कि तेरी बड़ाई करूं और न कोई पलटा मेरे पास है परंतु हां तेरा रिणी रहूंगा तब जमीला खातूं ने शाहज़ादे को राज सी वस्त्र पहनाये तो शाहज़ादे का रूप ऐसा चमका कि मानो शशि भूतल में आय विराजा है जमीला ख़ातूं देख के शाहज़ादे के रूप पै बावरी हो गई और मारे प्यार के उस से सब हाल पूछने लगी कि तुम कौन हो और कहां से आते हो और क्या नाम है और यहां आने का कौन हेतु है और लतीफा बानू के फन्दे में किस भांति आये तब शाहज़ादे ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त आद्योपांत कह सुनाया ज-

मीला खातूं यह समाचार सुनते ही बहुत शोच में होके बोली कि हे शाहज़ादे अभी तो चौथाई राह भी नहीं बीती है और इतनी आपदा भोग चुका है इसलिये अब इस राह से पांव हटा क्योंकि यह राह बहुत ही कठिन है और इस जवानी को क्यों वृथा खोने का विचार करता है इस लिये तुझ को उचित है कि इस घर को तो अपना घर समझ और मुझे अपनी दासी मान मैं सब प्रकार तुम्हारी सेवा तन मन से करूंगी और तुम्हारे चैन को अपना ही सुख जानूंगी शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि यह तो सत्य है और तुमने मेरे साथ ऐसी ही भलाई की है कि जो तू मेरे खाल की जूती बना के पहरे तो उचित है क्योंकि तैंने मुझे उस जादूगरनी के जाल से छुड़ाया है इस का पलटा जगत में कोई नहीं है मैं जीते जी तेरा रिणी रहूंगा परंतु मेरा मन एक मार्ग में लगा है जो तुम से हो सके तो मेरी सहायता करो कि जिस्सें वहां पहुंच के अपना मनोर्थ पाऊं तो पिरके तुम्हारे साथ बिवाह करूं और अपने देश को ले चलूं और शेष आयु तुम्हारे साथ भोग बिलास में काटूं जब जमीला खातूं ने देखा कि शाहज़ादा किसी भांति नहीं रहता तो हारके शाहज़ादे को जाने की आज्ञा दी और कहने लगी कि अच्छा तुम जाते ही हो तो एक कमान और तीर और एक खड्ग जो बादशाहों को भी दुर्लभ है और उस का यह गुण है कि जो तुम पहाड़ पर भी मारो तो दो टूक हो जाय और इस तलवार को अकर ब सुलेमानी बोलते हैं और एक छुरी है कि जिसको विद्वानों ने बड़े यत्न से बनाई है और उस में यह गुण है कि जिसके पास वह छुरी हो तो उस पै जो कोई सहस्त्र मन का बोझ भी छोड़ दे तो उस को पैसा भर भी न मालूम हो और जो कोई उस पर

चोर चलावे तो किसी भांति का अस्त्र शस्त्र न बेंधेगा और
इस का नाम खंजर तैमूरी है ये तीन वस्तु तुम्हारे साथ देती हूं
राह में तुम्हारे काम आवेंगी और जब यहां से जाओगे तो सी
मुर्ग़ की सहायता बिन उस देश में न पहुंचोगे क्योंकि चाकाफ़ की
राह में सात महानद पड़ते हैं जो उन को सृष्टि भर के राजा मि-
ल नांघा चाहें तो भी किसी भांति पार न जा सकेंगे तब शाह-
ज़ादा बोला कि हे खाला मैं वहां किस भांति पहुंचूंगा और सी
मुर्ग़ कहां है और कैसे पाऊंगा यह सुन के जमीला खातूं बोलीं
कि मैं तुझ को सब बातें बताये देती हूं ईश्वर की दया से बहुत शीघ्र प-
हुंचा जायगा यह कह संदूक़ खोल अकाब जुल्ले मानी और तीर
कमान शाहज़ादे के आगे ला धरे और कहने लगी कि जो मैं कहूं
सो सुनो कि पहले दिन की राह में जो मकान मिलेगा उस को सफ़
हे ज़मीन कहते हैं और वहां तुम को एक झरना मिलेगा वहां ही
रात को निवास कीजियो वहां बहुत से जीव रात को आते हैं उन
में से कुछेक अहेर करके अपने पास रख छोड़ियो जब तेरे पास
एक सिंह अति बलवान आवेगा वही सम्पूर्ण वन का राजा है
तू उस को देख के भयातुर न हूजियो वरण उसके पास जा के
सलाम कीजियो और जो रूमाल मैं तुझे देती हूं उस से उस का
सम्पूर्ण अंग साफ़ कीजियो तिस पीछे जो अहेर करके अप
ने पास रक्खे सो उस को भोजन दीजियो जब वह भोजन
करने लगे तब तू बैठ के मांस को छुरी से टुकड़े २ कर दीजियो
जब वह भोजन करके तृप्त होगा तब उस के डर से कोई जीव
तेरे पास न आवेगा तू आनन्द से सोइयो और इसी भांति वन में
बाघों की सेवा करते जाइयो तो आनन्द से वन के पार हो जायगा

फिर एक दुराहा मिलेगा वहां सचेत होके दाहिनी ओर की राह ली
जियो बाईं ओर की राह कीमत जाइयो थोड़ी दूर चल के एक नं
गियों का कोट मिलेगा वहां चालीस हबशी कि उन में से प्रत्येक
हबशी पांच सहस्र नंगियों का यूथप है वे उस कोट के द्वारपा
लक हैं और वह नंगियों का कोट जगत में विख्यात है और उ
स कोट का स्वामी अतिही निर्दई है परन्तु इस रूमाल और तल
वार के प्रभाव से तेरे ऊपर वह भी अति दयाल हो जायगा सो एक
दिन वहां रहियो आगे जा के सौ बुर्ज़ के मकान पर पहुंचेगा वहीं
इन्हीं वस्तुओं के प्रभाव से तेरी सेवा करैगा और उसी की दया से
वाकाफ के देस में पहुंचेगा परन्तु मेरे कहे को स्मरण रखियो इ
स भांति शाहज़ादे को राह बता के घुड़सार से एक वायु गामी
घोड़ा मंगवाय के शाहज़ादे को दिया शाहज़ादा सवार हो
के अपनी राह ली तो जमीला खातूं उस के विरह में ऐसी अ
धीर हुई कि घोड़े के पीछे तीन कोस तक चली गई जब शाह
ज़ादे ने पीछे फिर के देखा तो जमीला खातूं दृष्टि पड़ी
उस को देख उतर पड़ा और सम्पूर्ण सामान सुख चैन की उसी
ठौर मंगवा के उस के साथ मदिरा पान कर के भोग विलास
किया तड़के जमीला खातूं को मकान की ओर लौटा के
आप अपनी राह ली तो जमीला खातूं शाहज़ादे के विरह
में ऐसी विकल हुई कि जैसे थोड़े पानी में मछली तड़फती
है सोई दशा उसको हुई कि तन छीन मन मलीन खान पान
त्यागे न किसी से बोले न चाले निदान शाहज़ादे की विरह
में ऐसी हीन हुई कि तनक चलने की सामर्थ्य नहीं रही और
वहां शाहज़ादा सफ़ेद ज़मीन पर पहुंचा तो एक दुराहा मिला

वहां शाहज़ादे को जमील खातूं का कहा स्मरण हुआ चट्ट
ही जाल फैला के शिकार के आसरे में बैठा जब पहर रात बीती
तब भांति २ के जीव वहां आए उन में से कितनों को मार के
अपने पास धर रक्खा जब आधी रात बीती तब वे सम्पूर्ण जी-
व वन के अपने २ ठिकाने को गए तो एक सिंह अस्सी ८०
गज का लम्बा उस वन में से निकला यह ढिठाई से उस के पास
जाय दण्डवत कर रूमाल से उस के हाथ मुह साफ कर जो जीव
अहेर करके अपने पास धरे था सो ला के उस के आगे धरे वह
बैठ गया शाहज़ादा छुरी से मांस के टुकड़े कर कर के धर-
ता गया और सिंह भोजन करता गया और जो बाघ उस के
साथ थे सो जब तक उसने भोजन किये तब तक चारों ओर
खड़े रहे और जब वह भोजन कर चुका तब उस का झूठा भो-
जन औरों ने किया शाहज़ादे ने रूमाल से फिर उस के हाथ
मुह पोंछ दिये उसने शाहज़ादे को बहुत ढाढ़स दिया और क-
हा कि यहां तू आनन्द से सो किसी बात की भय नहीं है यह कह
एक बाघ शाहज़ादे की चौकी को छोड़ के आप तो वन में गया
और शाहज़ादा आनन्द से रात भर सोया सवेरा होते ही उस
बाघ ने भी वन की राह पकड़ी

छठी कहानी

जंगियों के कोट पर पहुंच के उन से युद्ध करने और शाह
ज़ादे के हाथ से जंगियों के बादशाह के मारे जाने औ-
र उस की बेटी से विवाह कर वा काफ़ के
देश को जाने के विषय में ॥

निदान शाहज़ादा अपने परमेश्वर को शीस नाय घोड़े पर

सवार हुआ जब थोड़ी दूर पर पहुंचा तो एक दुराहा मिला वहां जमीला खातूं की सीख के अनुसार दाहिनी राह में चला जब दो तीन दिन चलते बीते तो एक कोट सुमेर गिरि का सा कंगूरा दृष्टि पड़ा कि जिस के प्रत्येक बुर्ज पर बड़ी २ तोपें चढ़ी हुई और युद्ध की सम्पूर्ण सामान धरी हुई है यह देख वहां से फिरने का अनुमान किया पर यह बात बहादुरी के विपरीत जान कहने लगा कि होनी होय सो होय अब तो चलते ही बन्ता है इसी भांति शोचता हुआ कोट के पास तक जा पहुंचा तो एक अपूर्व कोट देखा कि ऐसा कोट बादशाहों ने स्वप्न में भी न देखा होगा कि जिस की उंचाई को देख के हिमालय यद्यपि पर्वतों का राजा है पर वह भी उस के आगे माटी का टीला सा दृष्टि आता था और उस के आगे एक वृक्ष अत्यन्त भारी लगा हुआ था उसी के नीचे शाहज़ादे ने अपना घोड़ा बांध जीन पोश बिछाय के बैठ कोट की शोभा देख रहा था कि इतने में कई एक जंगी दृष्टि पड़े और वे शाहज़ादे को देख बहुत प्रसन्न हो के आपस में बातें करने लगे कि आज बहुत दिनों में एक मनुष्य दृष्टि पड़ा है और हमारा बादशाह मनुष्य का मांस खाने से बहुत प्रसन्न होता है इसलिये इस को बादशाह की भेंट देना चाहिए यह अनुमति ठहराय के शाहज़ादे के पास आ उस को पकड़ना चाहा तब शाहज़ादे ने कहा कि तुम मुझे किस लिये पकड़ते हो जंगियों ने उत्तर दिया कि हमारे बादशाह को मनुष्य के मांस से अधिक रुचि है इस लिये उस के पास तुझ को ले जांयगे तो उस के पलटे हम बहुत साधन पावेंगे शाहज़ादे ने अपनी

जान के बाधक जानि कमर से अकरब सुलेमानी ऐंचि सब को एक २ करके दो टूक किया जब यह समाचार बादशाह तमर ता क़ को पहुंचे तो उस ने खिलमाक एक सेना पति को बहुत सी सेना देकर शाहज़ादे के पकड़ने को भेजा शाहज़ादे ने जो आं ख उठा के देखा तो बहुत सी सेना चारों ओर दृष्टि पड़ी और एक क्षण मात्र में खिलमाक शाहज़ादे के पास आय के कह ने लगा कि ऐ मूर्ख तुझ को अपने प्राणों की भय नहीं है जो यहां आके इतने जंगियों को मारा है जब शाहज़ादे ने ऐसी ढिठाई की बातें सुनी तो पास आय अकरब सुलेमानी निकासी त्योंहीं उस ने एक गदा शाहज़ादे के शीस पर मारी और कां ख में दाब के चाहा कि बादशाह के पास ले चलें वैसे ही शा हज़ादे ने कमर से करौली निकाल के ऐसी मारी कि लगते ही बड़ा भारी घाव हो गया और पृथ्वी पर गिर पड़ा जब यह समाचार तुग़लाक बादशाह को मिला तो बड़े क्रोध से ब हुत सी सेना लेके शाहज़ादे के पास गया और यह बिचार किया कि शाहज़ादे को पकड़ के कोट के भीतर ले जांय और शाहज़ादा जंगियों के युद्ध से घबड़ा रहा था क्योंकि एक को मारता तो दश उत्पन्न होते थे उस समय कुछ बन न पड़ा इतने में दो सिंह जिनकी सेवा शाहज़ादे ने की थी ब हुत से बाघ लेके अचानक दृष्टि वान हुये और बादशाह की सेना की ओर झुके यह देख जंगी लोग मन में सोचने लगे कि यह मनुष्य नहीं है कोई मनुष्य के भेष में यम दूत है आ पहुंचा है फिर सम्पूर्ण सेना कोट के भीतर जाने लगी उस समय शाहज़ादे ने अच्छी तरह सचेत होसब को मार २ गि-

रने लगा इतने में शाहज़ादे की निगाह अचानक तुरमताक पर
पड़ी कि ताड़ के सदृश लम्बा हाथ में गदा लिये और बहुत से प-
त्थर के टुकड़े लिये कोट के भीतर जाता था कि शाहज़ादे ने
ललकार के कहा कि रे कायर कहां जाता है खड़ा तो रह जब
तुरमताक ने शाहज़ादे की ललकार सुनी तब फिर के बोला
कि हे मनुष्य कुशल तो है आ देख एक ही गदा मे तेरी हड्डियां
चूर किये डालता हूं यह कहके यद्यपि भयातुर था तद्यपि
शाहज़ादे के ऊपर धाय कर गदा चलाई पर शाहज़ादे ने
ऐसा घोड़े को कावा दिया कि गदा की वायु भी शाहज़ादे के
अंग में न लगी और गदा उस के हाथ से छूट गिरी तब बादशाह
ने जाना कि वह मनुष्य तो मेरे गदा के माटी में मिल गया हो
गा इसी बिचार से धरती टटोलने लगा इतने में शाहज़ादा घो
ड़ा फिरा के उस के सनमुख आय के खड़ा हुआ शाहज़ादे
को देख के तुरमताक बादशाह ने पूछा कि तू मेरे गदा प्रहार से
कैसे सजीव बचा जो पर्वत होता तो वह भी माटी में मिल जा-
ता तब शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि ईश्वर की दया से मैंने तेरी
गदा की वायु भी नहीं जानी कि कैसी होती है यह सुन तु-
रमताक ने चाहा कि उठ के दूसरी गदा मारे त्योंहीं शाह-
ज़ादे ने अकरब सुलेमानी नामक जो तलवार लिये था ऐ-
सी शिर पे मारी कि जरासिन्धु के समान दो फांक हो गई
उस समय रणभूमि में रक्त की नदी बहती थी और जंगियों
के धरसूस वो घड़ियाल से लगते थे और शीस नाना कम-
ठ और बाल सिवार के समान थे और छुरी कटारी मछलि-
यां के सदृश चमक रही थी निदान वह सिंह जो शाहज़ादे की

सहायता को आया था इस की मनुसाई देखे अति सराहना क
रने लगा शाहज़ादे ने उसी रूमाल से उस के हाथ मुंह फिर पो
छा तब सिंह उस को कोट के भीतर ले गया तो शाहज़ादा तुर
मताक के बाग को देख के अति ही प्रसन्न हुआ जब तुरम
ताक़ की बेटी जो चन्द्रकला के समान सिंहासन पर शोभि
त थी शाहज़ादे को देख के सिंहासन से उठ के आगे लेने
को आई और ले जा के सिंहासन पर बैठारा और शाहज़ादे को
खाना खिला पिला के मुसलमानी मत का उपदेश लिया औ
र शाहज़ादे से कहने लगी कि हे शाहज़ादे अब मैं तेरी दासी
हूं जहां तू रहेगा वहां मैं भी परछांई के समान तेरे साथ रहूं
गी तब शाहज़ादे ने कहा कि हे प्यारी अभी मुझे एक आव
श्यकता है लौट के तुझको अपने साथ निज देश को ले चलूं
गा पर जब तक मैं लौट के न आऊं तब तक तू आनन्द से राज्य
कर फिर शाहज़ादे ने उस सिंह से एक बाघ उस सुन्दरी की
रक्षा को मांगा तो वह एक बाघ चौकी देने के लिये छोड़ ग
या फिर शाहज़ादा जंगियों की घुड़साल से एक उत्तम
घोड़ा ले सवार हो वहां से आगे को सिधारा

सातवीं कहानी

शाहज़ादे का सी मुर्ग़ के मकान पर पहुंच कर सर्प को मार उस
के बच्चों को बचाने और सी मुर्ग़ की सहायता से था-
क़ाफ़ देश में पहुंचने के विषय में ॥ ॥

निदान दो तीन महीने चलने के उपरान्त शाहज़ादे को एक बन
ऐसा हरा भरा मिला कि उस के आगे इन्द्र का उपबन दृष्टि
में नहीं जचता था कि वृक्षों के ऊपर बसेरा ले के पक्षी कोला-

हल कर रहे थे और ठौर २ नहरें स्वच्छ पानी की बहती हुई देख
शाहज़ादा उस बन की रम्यता देख एक वृक्ष के नीचे बैठ गया ॥
और उस के नीचे एक हौज़ संगमरमर का बना हुआ जिस का पा
नी एक ओर से दूसरी ओर को बहता था देखा शाहज़ादे ने वहां बैठ के
मन में सोचा कि होय न हो तो यही ठौर सीमुर्ग के रहने का है
इसलिये जमीलाख़ातून के कहने के अनुसार यहां निवास क
रना उचित है यह सोच के घोड़ा को चरने को छोड़ आप हौज़
में स्नान करके जो भोजन पास बांधे था सो खा कर उसी वृक्ष
के नीचे बिछौना बिछाय के सोने लगा शाहज़ादा मारे राह की
थकावट के अचेत सो रहा इतने में शाहज़ादे का घोड़ा भा
ग कर शाहज़ादे के सिरहाने पृथ्वी पर टापें मार २ हिनहि
नाने लगा उस का हिन हिनाना सुन के शाहज़ादा चौंक प
ड़ा तो क्या देखता है कि एक काला सर्प सामने चला आता
है और जो वृक्ष और पत्थर उस की छाती के नीचे पड़ता था
सो तत्काल विष के भस्मीभूत हो जाता था शाहज़ादा उस
को देख परम भयातुर हो घबड़ा के उठा और इसहाक़ पैग़म्बर
की कमान ले ओण से तीर निकाल बाण साध घात लगाय
के बैठा जब शाहज़ादे ने देखा कि वह वृक्ष पै चढ़ा चाह
ता है त्योंही शाहज़ादे ने खैंच के ऐसा तीर मारा कि उस का
फन घायल हो गया तो वह वृक्ष के नीचे तड़फड़ाने लगा थो
ड़ी देर में उस के मुख से एक ऐसा लूक निकला कि सम्पूर्ण ब
न में चांदनी छा गई और मारे विष की आग के पृथ्वी तपने
लगी और सर्प ने क्रोध की दशा में शाहज़ादे को देख के चा
हा कि वायु के साथ शाहज़ादे को अपने मुख में खींच लेपर

तु शाहज़ादा उस के सामने से अलग हो के एक तीर उस के गले में और मारा पर वह अच्छी तरह से नहीं लगा तब शाहज़ादे ने परमेश्वर का स्मरण करके ऐसी तलवार मारी कि एक ही वार में वह दुख दाई मृत्यु बश हुआ पर शाहज़ादा मारे बिष की आंच के अचेत होगया था जब थोड़ी देर में चेत हुआ तो ईश्वर को दण्डवत कर हौज़ में जा के अपना शरीर जो रक्त में डूबा हुआ था धोया फिर कुछ भोजन करके उसी हौज़ के किनारे बैठ गया इतने में उस वृक्ष के ऊपर को जो दृष्टि करी तो देखा कि उसी के ऊपर सी मुर्ग़ का घोसला है सी मुर्ग़ के बच्चे ऊपर से उस सर्प के साथ शाहज़ादे की लड़ाई का तमाशा देख रहे थे परंतु मारे भूख के चिल्लाय रहे थे शाहज़ादे ने उसी सर्प के मांस को छुरी से काट २ के उन बच्चों को खिलाया जब उन का पेट भरा तब वे तो अपने घोसले में सो रहे और शाहज़ादा भी उसी हौज़ के किनारे पर सो रहा इस बीच में सीमुर्ग़ का जोड़ा जो चरने को गया था सो आया तो उन में से पुरुष बोला कि यही मनुष्य है जो हमारे बच्चों को सदा मार खाता है और हम को पुत्र शोक देता है इस लिये उचित है कि आज हम भी इस का चिन्ह मिटाय दें यह शोच के कई हज़ार मन का पत्थर का टुकड़ा उठाय लाया और शाहज़ादे के ऊपर छोड़ देने के विचार में था कि इतने में स्त्री बोली कि अभी इस मनुष्य को बध करना उचित नहीं है पहले मैं अपने बच्चों को देख लूं कदाचित यह हमारा हितू हो तो इस को बध करके अन्त के दिन ईश्वर के आगे क्या उत्तर देंगे क्यों कि बुद्धिमानों ने कहा है ॥

चौ॰ सहसा करि पाछे पछिताहीं। कहैं बेद बुध ते बुध नाहीं॥
यह नीति संयुत बानी स्त्री की सी मुर्ग़ पुरुष को बहुत ही अच्छी लगी जब स्त्री ने घोंसला में देखा तो बच्चा आनन्द से सो रहे हैं पर आहट सुन के बच्चे जाग उठे और सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी माता से कहा तब वह सुन के बहुत प्रसन्न हो के शाहज़ादे की बड़ी प्रशन्सा करने लगी और कहा कि इस सतपुरुष ने मेरे साथ बहुत भलाई की है इस से मुझे भी इस के पलटे में कुछ इस के साथ भलाई करना उचित है यह कह वृक्ष के नीचे उतर के शाहज़ादे के ऊपर अपने पंखों से छाया किये रही जब शाहज़ादा सो के जागा तो सी मुर्ग़ की स्त्री ने बड़ी दया से कुशल प्रश्न के उपरान्त पूछा कि हे जवान तुझ को कौन ऐसी बिपत्ति पड़ी है कि जिस के कारण तू ऐसे बिकट बन में जहां मनुष्य की तो कौन बात है कोई पशु भी नहीं आता है और तैंने मेरे साथ बहुत भलाई की है कि-ऐसे बड़े शत्रु के हाथ से मेरे बच्चों को बचाया अब तू बता कि यहां किस प्रयोजन से आया है उसमें मैं भी यथा सामर्थ्य सहायता करूं तब शाहज़ादे ने सी मुर्ग़ से अपना वृत्तान्त आछी भांति कहा तो सी मुर्ग़ बोला कि हे शाहज़ादे तू यहां कुछ दिन रह और जो कुछ मैं बताऊं सो मार्ग की आवश्यक वस्तु इकट्ठी कर ले तो चलने की यत्न करनी होगी शाहज़ादे ने कहा कि आप दया करके शीघ्र बताइये तो मैं मार्ग का सामान इकट्ठा करूं सी मुर्ग़ ने कहा कि हे शाहज़ादे यहां गोर खर बहुत आते हैं उन में से दो चार मार के उन के मांस का कबाब बना के और उन की खाल

की मशक बना पानी से भर के अपने साथ रख लो क्यों कि जब मैं तुझे अपनी पीठ पै चढ़ा के समुद्र पार उतारूंगा तो अति निर्बल हो जाऊंगा उस समय वही पानी और कबा ब दीजियो उसी भोजन और जल के सहारे से सात समुद्र पार करके शहर बा काफ़ में पहुंचूंगा शाहज़ादे ने सी मुर्ग़ की आज्ञानुसार सात गोरखर मार उन के मांस का क़बाब बनाये और उन की खाल में पानी भर के तैयार किया तब सी मुर्ग़ से कहा कि राह का सामान तैयार है सी मुर्ग़ ने कहा कि अब तू मेरी पीठ पर सवार हो और जब एक सागर लांघि के पार जाऊं तो मुझे यह क़बाब और पानी दीजियो यह सुन शाहज़ादा सी मुर्ग़ के ऊपर सवार हुआ एक साग र के पार हुआ तो सी मुर्ग़ को क़बाब और पानी दिया इसी भांति क़बाब खिलाता पानी पिलाता शहर बा काफ़ में प हुंचा तब सी मुर्ग़ शाहज़ादे से बोला कि हे शाहज़ादे तैंने मेरे साथ ऐसी भलाई की है कि मैं उस का पलटा इस सृष्टि में नहीं देखता और मैंने तुझे पुत्र कहा है इसी से मैं तेरे साथ यहां तक आया हूं और यहां से शहर बा क़ाफ की राह जाती है अब तुझे अपने कई पंख दिये जाता हूं जब तुझ को को ई कठिन काम पड़े तब तू मेरे पंख आगिन पै धरियो उसी समय तत्काल मैं अपनी सेना ले के तेरे पास पहुंचूंगा यह कह मुरवारीद का एक दाना शाहज़ादे को दे सी मुर्ग़ बिदा हुआ ॥

आठवीं कहानी

शाहज़ादे की शहर बा काफ़ में पहुंच कर अर्ज़रस क़ाज़ से

मिल उस के द्वारा सनोबर शाह की सेवा में पहुंच उसकी
वचनबन्द कर गुल के वृत्तांत के निर्णय के विषय में

निदान शाहज़ादे ने शहर वा क़ाफ की राह ली दो तीन दि न बीते शाहज़ादे को एक कोट दृष्टि पड़ा जब निकट पहुं चा तब परमेश्वर का स्मरण कर कोट के भीतर गया और उस शहर की गलियों में फिरने लगा शाहज़ादे ने शहर का बनाव देख के जाना कि शहर वा काफ यही है परन्तु महरंगे ज़ का मर्म्म कैसे मिले इतने में एक मनुष्य फ़र्रुख़ नामक मिला शाहज़ादे ने उस से ऐसी मित्रता की कि वह एक क्षण भी जो शाहज़ादे को न देखे तो जैसे जल बिन मीन बिकल होने ल गे ऐसे वह व्याकुल हो निदान एक दिन शाहज़ादे ने उस से साधारण रीति से पूछा कि हे मित्र गुल ने सनोबर के साथ क्या किया जो तुझ को कुछ इस का हाल मालूम हो तो बता॰ यह सुन के वह मनुष्य मारे क्रोध के आग बबूला होगया औ र भृकुटी टेढ़ी कर के बोला कि जो मेरे तेरे बीच मित्रता न हो ती तो अभी तुझ को मार डालता शाहज़ादा यह सुन के कम्पित हो शोचने लगा कि यह मनुष्य निस्संदेह इस वृ त्तान्त को जानता है तब शाहज़ादा बोला कि हे मित्र जो मेरे मारने में तू प्रसन्न है तो मुझे इनकार नहीं है परंतु पहले वह वृत्तान्त मुझ को बता दे जिस में मरती बेर यह अभिला ष मन में न रहे जब उस ने शाहज़ादे को इस वृत्तान्त का अ ति ही खोजी देखा तो कहा कि अच्छा किसी समय बताऊं गा यह सुन के शाहज़ादा इस आसरे में रहा कि देखें कब यह बतावेगा जब मन का ताप मिटेगा एक दिन उस मनुष्य ने॰

शाहज़ादे को बहुत ही चिंता देख के कहा कि हे प्यारे सनोबर इस शहर
के बादशाह का नाम है और गुल उस की बेगम अर्थात् पटरानी का
नाम है सो इस शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया है कि जो कोई विदेशी आ
के गुल और सनोबर का वृत्तांत पूछे उस को वहीं बध करो इस से अ
धिक मैं भी नहीं जानता और यह भेद कि गुल ने सनोबर के साथ क्या
किया सिवाय बादशाह के कोई नहीं जानता इसी मारे मैं ने तुझ को मि
त्रता की रीति से अप्रसन्न हुआ जो तू इस भेद ही को जाना
चाहता है तो मैं तुझ को बादशाह के पास ले चलूंगा उस से
तू पूछ लीजियो निदान वह मनुष्य शाहज़ादे को एक दिन अ
पने साथ बादशाह के पास ले जा के प्रार्थना करने लगा कि
हे दीनदयाल यह विदेशी पुरुष आप की दयालुता और नीति
का सुयश सुन के बड़ी दूर से आप के दर्शनों के अभिलाष
से आया है और इस बात का आशावान है कि आप की
सेवा में रह कर अपना पोषण करे बादशाह शाहज़ादे को
देख के बहुत प्रसन्न हुआ और अपनी सभा में दिन प्रति व
र्तमान रहने की आज्ञा दी तब शाहज़ादे ने वही दाना मरवा
रीद का जो सी मुर्ग़ ने दिया था सो बादशाह को भेंट दिया
बादशाह उस अमोल्य रत्न को देख अतिही प्रसन्न हो के
शाहज़ादे से पूछने लगा कि यह रत्न तू कहां से लाया है उ
स समय शाहज़ादे ने झूठ बोलना उचित जान के कहा कि
महाराज मैं सौदागर हूं सो बहुत से रत्न इसी प्रकार के ले के
आप के दर्शनों को आता था जब राह में जंगियों के कोट
के पास पहुंचा तब उन्होंने मेरा सम्पूर्ण धन लूट लिया यहां
तक कि पानी पीने को लोटा भी न छोड़ा परन्तु यह मरवारीद

कादाना जो आपको भेट दिया है सो मेरी बांह पै बंधा हुआ था इस्से उनकी निगाह नहीं पड़ी इससे यह बच रहा यह सुन के बादशाह की और भी अधिक दया और प्रीति हुई तब बादशाह ने सम्पूर्ण सामान आनन्द का उस को इकट्ठा करा दिया और जैसी कृपा विदेशी लोगों पर बादशाहों को करनी उचित है वैसी की और शाहज़ादे को ऐसा अपना मित्र बनाया कि उस के बिन देखे एक क्षणमात्र भी कल न पड़े जब बादशाह की बहुत प्रीति बढ़ी तो एक दिन शाहज़ादे से बोला कि हे मित्र अब तू बता कि तेरी अभिलाष क्या है सो प्रगट कर उसे मैं सब प्रकार पूरी करूं यह सुन शाहज़ादे ने सोचा कि ऐसा समय फिर हाथ न आवेगा इस लिये अब अपना काम कहना चाहिए तब शाहज़ादे ने कहा कि मैं अपने मन का भेद एकान्त में कहूंगा यह सुन बादशाहने शाहज़ादे को एकान्त में बुलाय ले जाय के पूछा कि अब बता तब शाहज़ादे ने कहा कि जो जीवदान पाऊं तो निर्भय हो निज मन की अभिलाष कह सुनाऊं बादशाह ने कहा कि मैंने तुझ को जीवदान दिया तब शाहज़ादे ने कहा कि हे पृथ्वी पति मैंने किसी से सुना है कि ॥ गुल ने सनोबर के साथ क्या किया ॥ उसी दिन से मैं इसी की शोध में बिपत्ति भोगता हुआ फिरा हूं पर इस का उत्तर कोई नहीं देता और केवल इसी भेद के जानने की अभिलाष से नाना प्रकार के कष्ट भोगता हुआ यहां तक आया और आप की सेवा का अधिकारी हुआ हूं सो हे दीन दयाल मेरे मन की अभिलाष यही है कि आप दया कर इस भेद से मुझे सचेत करिये यह सुन के सनोवर शाह बादशा

ह अग्नि की ज्वाला समान जलने लगा और रक्त समान लाल २ नेत्र कर शाहज़ादे से कहने लगा अब क्या करूं प्रथम तुझे जीवदान दे चुका हूं नहीं तो अभी तेरा सिर काट डालता अब बचन बन्द होने के कारण क्रोधा ग्नि में आप ने ही तन को दाहता हूं इस से उचित है कि तू इस भेद को मत पूछ क्योंकि यह भेद प्रगट करने के योग्य नहीं तब शाहज़ादे ने कहा कि हे दीनदयाल प्रथम आपने कहा है कि जो तेरे मन की अभिलाष हो वह पूरी करूंगा और मेरे इस के सिवाय दूसरी अभिलाष नहीं है जो आप अपने बचन का प्रति पाल किया चाहते हैं तो मुझे यह भेद बता मन का संताप दूर कीजिये जब बादशाह ने सत्य कहने के सिवाय कुछ उपाय न देखा तो चुपका हो रहा फिर एक दिन बादशाह ने नाच रंग की आज्ञा दी उस दिन बादशाह और शाहज़ादा और कितने एक गाने बजाने वाले इकट्ठे हुये और वहां मदिरा पान करने लगे और गाने वाले मीठे २ स्वरों से मन बहलाने वाले राग गाने लगे इतने में बादशाह ने एक प्याला मदिरा का भर के शाहज़ादे को दिया शाहज़ादे ने बड़े हर्ष से ले के पी लिया फिर तो आपस में मिल के भली भांति। मदिरा पान की तब शाहज़ादे ने निर्लज्ज निर्भय हो एक सितार उठाय के सितार के तार मिलाय इस ढब से नीचे की चौपाई गाई कि सम्पूर्ण सभा सद सुन के चित्र के सदृश जहां के तहां रह गये ॥

चौ॰ मैं जो कहूं सत्य सो मानो। रोदन समय और मति जानो।
जो स्रवत नयनन सों आंसू सो सब सुनो मानि बिश्वास॥

विरह छुरी लागी हिय माहीं। तातें रक्तधार हिय बाही ॥
सो नहिं ठौर बहन को पायो तातें नयनन द्वार बहायो
प्रात समय जो फूल निहारो ता पर मतिहि ओस मन धारो
लाज समय चम्पक बन्नी के निकस्यो रैन नीर यह ठीके
रात समय सोवन की बेरा ॥ सुधि आई प्यारी वहि ठौर
मन समुद्र सुख्यो तेहि ओर मोती तजे लाख के योग
सोई नयनन लिये बटोर ॥ बिखरि परे तिन सों यहि ठौर
पुनि ए हैं स्वाती के बूंद ॥ नयन सीप लीन्हों मुख मूंद
मित्र लखन को नयन उघारे निकसे मोती मनहुं सुढारे

फिर बादशाह ने शाहज़ादे को अपने पास बुला के कहा कि मैं तेरे गाने से अतिही प्रसन्न हूं अब जो तेरे मन की अभिलाष हो सो कह मैं सब पूरी करूंगा तब शाहज़ादे ने कहा कि मेरे तो उस भेद के पूछने के सिवाय और कोई भी अभिलाष नहीं है यह सुन बादशाह ने कहा कि एक बात पै तुझ को यह भेद बताता हूं कि जब तुझ से इस वृत्तान्त को आद्यो पांत कह सुनाऊंगा तो तेरा शिर काट लूंगा जो तुझको यह बात पसन्द हो तो मैं तुझ से यह भेद कहूं शाहज़ादे ने यह बात मान ली ॥

नवीं कहानी

सनोबर शाह और गुल के मिलने का वृत्तान्त जानने और जंगी और गुल की आपदा देखने के विषय में ॥९॥

निदान एक दिन सनोबर शाह ने शाहज़ादे से कहा कि हे प्यारे काहे को वृथा जीव खोता है अब भी तेरा कुछ नहीं बिगड़ा है भलाई इसी में है कि इस लाज संयुक्त भेद को मत

पुच्छ पर शाहज़ादे ने न माना तब सनोबरशाह ने शाहज़ादे के हठ से अपने नौकरों को आज्ञा दी कि वह कुत्ता जिस के गरदन में जड़ाऊ तौक पड़ा है ले आवो तब कई नौकर जो उस कुत्ता की सेवा के लिये नियत थे ले आए और एक ज़रबफ़्त के बिछौना पर उस को ले कर बैठाला फिर कितनी एक दासी भी आय वर्त्तमान हुई तिस पीछे एक स्त्री अत्यन्त स्वरूपवान जिस के गले में तौक पांव में बेरी और हाथों में हथकड़ियां पड़ी हुई बारह १२ जंगियों के पहरे में थी सो भी बुलवाई गई तिस पीछे एक थार जिस में एक जंगी का शिर ऐसा भयानक कि जिस को देखने से अत्यन्त भय मालूम होवे लाकर उस चन्द्रमुखी के सन्मुख रक्खा फिर बादशाह ने कांसे की आज्ञा दी रसोइयों ने भांति २ के व्यंजन ला के उस कुत्ता के आगे धरे जब कुत्ता भोजन कर चुका तो वही कुत्ता का जूठा भोजन एक महा निषिद्ध थाल में करके उस चन्द्रमुखी के आगे धरा जब वह कई ग्रास भोजन कर चुकी तब बादशाह ने उठ के एक लकड़ी बड़े ज़ोर से उस जंगी के शिर में मारी कि बहुत से बूंद रक्त के उस शीश से टपक पड़े वे रक्त के बूंद नौकरों ने उठाय उस स्त्री को बरजन चटा दिये तब बादशाह ने कहा कि हे मनुष्य अब तो तैंने सब हाल देखा इसलिये तेरा शिर काटता हूं शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि हे दीनदयाल आप की दया से यह तमाशा तो देखा पर इस का कुछ भेद न जाना जब शाहज़ादे से यह सुना तो बादशाह उस वृत्तान्त के कहने को उद्यत हुआ इतने में वह स्त्री रोय उठी उस के रोते ही जो आंसू उस की आंखों से

टपके सो मोती हो गए वह मोती नौकरों ने उठा के बादशाह को
दिये फिर क्षण एक में वह परी हंस पड़ी तो बहुत से फूल उस
के मुख से झड़ पड़े वे भी नौकरों ने उठा के बादशाह को दिये
बादशाह ने देख नौकरों को आज्ञा दी कि इन को अच्छी ज
गह धरो इतने में बादशाह ने फिर शाहज़ादे के शिर काटने
की आज्ञा दी तो शाहज़ादे ने कहा कि पहले मुझे सब भेद इ
स अचम्भे का बता दीजिये तिस पीछे मन माने सो कीजि
ये तब बादशाह ने कहा कि हे बिदेशी यह जो स्त्री लोहे की जं
ज़ीर में कसी है इसी का नाम गुल है और मेरा नाम सनोबर है
मैं इस देश का बादशाह हूं शाहज़ादे ने पूछा कि आप ने इ
स को कहां और कैसे पाया है बादशाह ने कहा कि एक दिन
मैं अपने नगर से शिकार के लिये निकला तो एक बिकट बन
में मैं मारे प्यास के पानी खोजने लगा तो बड़े खोज से एक
कुआ मिला पर वह कुआं भी ऐसे ठौर पर था कि जहां
मनुष्य की तो कौन कहे पक्षी भी नहीं था वहां मैंने अपनी कु
लाह की लुटिया और पगड़ी की डोरी बना के कुआं में फांसी
दैवयोग से वह कुआं में अटक रही और मैं मारे प्यास के मर
ने के निकट पहुंचा था बहुतेरा डोरी हलाई पर किसी भांति
न छूटी तब मैंने कहा कि जो कोई इस कुआं में बसता हो सो
मेरे ऊपर दया करके डोरी को छोड़ दे क्योंकि मैं मारे प्यास के
ब्याकुल हूं जब मैंने इस भांति दीन बचन कहे तो भीतर से
बोल सुनाई दिया कि हे पथिक तू हम को इस कुए से दया
कर के निकाल क्योंकि कितने एक दिन से हम इस कुआं
में पड़े हैं तब मैंने उन को बड़ी कठिनता से बाहर निकाला

तो देखा कि दो अंधी बुढ़िया हैं और अंग उनका कमान की भां
ति देह और तन ऐसा छीण कि हाथ पांव मानो सींक हैं आंखें
कपाल में घुस गई हैं शिर हलता है दांत गिर गए हैं पांव ध
रते डगमगाती हैं शिर के बाल श्वेत हैं मारे दुबलेपन के सारी
देह में सिकुड़े पड़ गये हैं ऐसी दो सूरतें मेरे सन्मुख खड़ी हुई
तब मैंने उन से पूछा कि इस कुआं में तुम्हारे बन्द होने का क्या
कारण है उन स्त्रियों ने कहा कि हे पथिक यहां के बादशाह
ने हम को अंधी बनाय के इस कुआं में डरवा दिया था अब
परमेश्वर ने तेरे द्वारा हम को इस कुआं से निकाला है परन्तु ह
म तुझ को एक औषधि बताती हैं जो तू दया करके उस को
लाके हमारी आंखों में लगा दे तो हमारी दृष्टि यथा पूर्वक हो जाय तुझे
इस में बड़ी पुन्य होगी और इस के पलटे में हम भी तेरी सेवा करेंगी यह
सुन मैंने उनसे पूछा कि औषधि तुम्हारी आंखों की क्या है
तब उन्होंने कहा कि यहां से थोड़ी सी दूर पै एक नदी के कनार
है उस के तीर पर एक गऊ चरने को आती है उस का गोबर
ले के हमारी आंखों में लगा दे तो अच्छी हो जांय परन्तु एक
काम कीजियो कि जब तू वहां जाय तो अपने को उस गऊ
की दृष्टि से ओट में रखियो नहीं तो तुझ को वह सजीव न छो
ड़ेगी निदान मैं उन अंधी स्त्रियों के पते से गया थोड़ी देर में उ
स नदी के तीर पै जा पहुंचा तो देखा कि सत्यही एक गऊ रू
पै की उस नदी से निकली मैं तुरन्त ओट में हो रहा जब वह
चर फिर नदी में गई तो मैं उस का गोबर ले के उसी कुआं पै
आय उन की आंखों में लगाया तो तुरन्त उन की आंखें
आम की सी फांकें खुल गई तो उसने चारों ओर देख परमेश्वर

धन्यवाद किया और मेरी मनसाई की बड़ी प्रशन्सा की कह ने लगी कि यहां परियों का बादशाह रहता है उस की बेटी ऐसी स्वरूप वान है कि उसके मुखार बिन्द को देख पूनो का चन्द्रमा लज्जित होता है और उस के माता पिता भी उस के रूप पै लोभे हैं कि एक क्षण भी उस को आंखों से अलग नहीं करते हम तुझ को उस के पास ले चलते हैं तू आनन्द से उस के साथ भोग बिलास की जियो और जो कदाचित उस के मा ता पिता पर तेरा उस के साथ रहना विदित हो जाय तो वे तु झ को अग्नि में छोड़ने की आज्ञा देंगे उस समय तू कहि यो कि जो मुझ दीन को आप अग्नि में छुड़वाने की आज्ञा देते हैं तो थोड़ा सा तेल मेरे अंग में मलवा दीजिये जिस्सें शीघ्र सन्सार के दुख से छूट जाऊं तो परियों का बादशाह तेरी यह बात सुन के तेल मलने की आज्ञा देगा उस समय हम तेरे अंग में ऐसा तेल मल देंगी कि अग्नि में जो तू हजा र बर्ष तक पड़ा रहै तौभी तेरी देह में आंच न लगे निदान वे बु ढ्या मुझ से यों कहके उस महल के भीतर लेगई तो मैंने जाना कि सत्य २ इन्द्रपुरी यही है वहां एक रत्न जटित त ख्त पर एक चन्द्रमुखी सोती हुई देखी कि जिस के मुखार बिन्द की चमक के आगे सूर्य्य की किरण मध्यम लगती थी और उसी की शोभा से सम्पूर्ण मकान जगमगाय रहा था॥

दशवीं कहानी

गुल और सनोबर शाह का मिलना दोनों बुढ़ियों की सहायता से और अग्नि में डारे जाने के उपरान्त गुल परानी के साथ बिवाह होने के बिषय में ॥ ९ ॥

निदान मैंने जब दूर से उस का स्वरूप जो देखा तो ठग सा होग या जब थोड़ी देर में चेत हुआ तो अपने मन में सोचा कि हे भ गवान यह मैं स्वप्न देखता हूं कि सत्य २ है फिर आप को सम्भा ल परमेश्वर का स्मरण कर सोचा कि जो मैं यहां सोया तो अ पने प्राणों से हाथ धोया इस लिये मन को पुष्ट कर उस च न्द्रमुखी के सन्मुख जाय खड़ा हो रहा एक क्षण में वह जागी तो मेरे ऊपर दृष्टि पड़तेही उस के नयनों का बाण ऐसा ल गा कि हृदय के वार पार हो गया और उस के मिलने की ला लसा से अधीर होगया और वह सुन्दरी भी भौहें चढ़ाय क्रोध के चिन्ह प्रगट कर भड़क के बोली कि पुरुष तू अन चीन्हा पराए घर में कौन है और कहां से आया है और किस प्रकार यहां आया है तुझ को अपने प्राणों की बा धा नहीं है जो मरने के लिये यहां आया है इस भांति की ऊ परी बातें डर पाने की बहुत सी करी परन्तु अन्तर में मेरे मिल ने की अभिलाष उसके भी मन में बढ़ी तब मैंने कहा कि मुझे मरने से कुछ डर नहीं क्योंकि ॥

दो॰ जरा मरण जग में सदा या की कौन अन्देश ॥ * ॥

तो ती प्यारी के लिये सहिये बिबिध कलेश ॥ * ॥

निदान इसी भांति की लगावट की बातें करता रहा जब उ सने देखा कि यह किसी भांति नहीं डरता तबतो उसने उ ठ के बड़े दिमाक से मेरा हाथ पकड़ के मसनद पर बैठाल मेरे हृदय से चिपट गई उस समय जो मुझे हर्ष हुआ सो केवल मन हीं जान्ता है और जिह्वा की कहां सामर्थ्य है जो कहै फि र उसने अंगूर की मदिरा मंगवाई और आपस में बैठ के दोनों

मदिरा पान करने लगे और मैंने उस मकान को सूना पाया तो मदिरा के मद में उस प्यारी से भोग बिलास करने लगा इसी भांति कई दिन आनन्द से बीते परन्तु उस प्यारी को अपने माता पिता का भय अधिक रहा करता था कि ऐसा न हो कि उन को यह भेद बिदित हो यतो वि छोह का समय पहुंचे और दोनों के वृथा प्राण जांय इसी सोच में निशि दिन मन ही मन में कुढ़ा करती निदान इसी हर्ष बिस्मय में दो मास बीते परंतु जैसी कहावत प्रसिद्ध है कि ॥

दो० इवका ए से कब दुरे घास घुसेरे आग ॥४॥ ५४॥
यथा प्रीति जग खुलेगी जिमि पानी के झाग ॥

अन्त को सोई हुई कि एक दिन उस के पिता परियों के बादशाह ने अपनी बेटी को देख बहुत बिस्मित हुआ और उसी समय अपनी स्त्री को बुला के कहा यह क्या कारण है कि इस के मुख का रंग बदला है इस का भेद लेना उचित है यह सुन उस की माता उस के पास आय के पूछने लगी कि हे बेटी सत्य बता कि तेरी चेष्टा बदलने का कौन हेतु है सत्य २ बता दे नहीं तो तत्काल ही तुझ को मरवा डालूंगी निदान जितना उस के माता पिता उस से पूछते थे उतना ही वह मौन साधती थी इस से उस के पिता ने जाना कि निसंदेह इस से किसी पुरुष का संयोग भया और लाज छोड़ माता पिता के मस्तक में नील का टीका दिया तब परियों के बादशाह ने क्रोध में आके देवों को बुला के आज्ञा दी कि इस जवान को ले जा के अग्नि के कुण्ड में छोड़ दो देव आज्ञा पाते ही मेरा हाथ पकड़ के मकान के बाहर निकाला और काठ इकट्ठा कर

अग्नि लगाई जब ज्वाला उठी तब मुझे उसमें छोड़ने का वि-
चार किया तब मुझे उन दोनों बुढ़ियों की सीख सुध आई तो
मैंने पुकार के कहा कि हे परियों के बादशाह जो दण्ड तैंने इ-
स दोष के लिये नियत किया है सो उचित है परन्तु ईश्वर के
लिये अपने राज्य की निछावर थोड़ा सा तेल मेरे तन पै मल-
वा दे जिसे शीघ्र जल जाऊं और सृष्टि के दुःख से छूट जाऊं
यह मेरी बात उस ने मान के तेल मलने की आज्ञा दी तो नजा-
ने उन बुढ़ियों ने काहे का तेल मेरे तन में मल दिया कि सा त
दिन तक मैं अग्नि में पड़ा रहा परंतु देही में कहीं एक झलका
भी न पड़ा बरण वह आग पानी के समान मुझे लगी और जब
उन देवों ने जो मेरे जलाने को नियत हुए थे जाना कि अब
तो वह मनुष्य जल के राख हो गया होगा तब यह समाचार
जाके बादशाह से कहा कि अब तो वह मनुष्य राख होगया
होगा तब बादशाह ने आज्ञा दी कि राख वहां से उठा के दूस
री ठौर छोड़ दो जब वे देव मेरी राख उठाने को आए तब मुझे
उस आग में सजीव पाके बहुत आश्चर्य करके कहने लगे
कि यह मनुष्य कोई सिद्ध है और यह सुन्दरी इसी की भाग्य में
लिखी है तब देव और परियों ने बादशाह को समझाया कि कुं
वरि का बिवाह इस मनुष्य के साथ करना उचित है तब बा-
दशाह ने उनकी अनुमति अनुसार शुभ सायत विचार के
बिवाह की सामा इकट्ठी करने की आज्ञा दी आज्ञा पाते ही
देव और परी बिवाह की सामा इकट्ठी करके बादशाह के
पास आये तब बादशाह ने मुझे अपने सन्मुख बुलाया मे-
रा नाम गाम पूंछा तो मैंने कहा कि मैं शहरवा काफ़ का

शाहज़ादा हूं बहुत दिनों से तेरी बेटी की प्रीति में फंसा हूं अब परमात्मा ने तेरे हाथ में मुझे बन्द किया है तू उचित जो जाने सो कर यह सुन के बादशाह ने मेरे हाथ पांव खुलवा के मुझे अपने सिंहासन पर हाथ पकड़ के बैठाला और अपने अपराध की क्षमा मांगने लगा निदान उसी सायत पर मेरा विवाह उस सुन्दरी के साथ कर दिया फिर थोड़े दिन वहां रहके मैंने अपने देश को आने के लिये बिदा मांगी तब बादशाह ने बहुत सा धन देके मुझे बिदा किया और कितनी एक परी साथ कर दीं उन्होंने उड़न खटोले पर बैठाल के एक क्षण मात्र में मेरे नगर में ला बैठाया हे पाथिक वह सुन्दरी यही है जो तेरे सन्मुख लोहे की जंजीर में बंधी है बस अब तो मैंने सामने सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया इस लिये तुझे भी उचित है कि मेरे पास आ तो मैं तेरा शीश काटूं तब शाहज़ादे ने कहा कि अभी तो मेरा संतोष नहीं हुआ क्योंकि आपही निर्णय कीजिये कि भला मेरे चित्त संतोषार्थ को इतना वृत्तान्त ठीक है हां अब दया करके यह तो बताइये कि कौन ऐसा अपराध इस से हुआ कि जिसके पलटे इस के लिये यह दण्ड नियत किया है कि पावों में बेड़ी डाल के यह दुर्गति करते हो॥

ग्यारह वीं कहानी

गुल की दुष्टता सनोबर शाह के साथ उस के बदले दण्ड पाने और इलमास रूह बख़्श की महरंगेज़ मिलने के विषय में ॥÷॥

तब सनोबर शाह ने कहा कि हे पथिक अब तुझ से गुल की दुष्टता का वृत्तान्त कहता हूं तू कान लगा के सुन कि एक रात को

यह वृत्तान्त है कि शयनागार में मैं और यह सुन्दरी जिस का नाम गुल है एक ही पलंग पर दोनों सो रहे थे इतने में मेरी आंख जो खुली तो इस के हाथ पांव पाले से भी अधिक ठंढे लगे तब मैंने जाना कि कोई रोग इस प्रकार का होगया कि जिस के कारण इस के हाथ पांव ऐसे ठंढे हो गये हैं तब मैंने पूछा कि हे सुन्दरी तेरे हाथपांव शीतल होने का क्या कारण है तब उस ने कहा कि मैं बाहेर भूमि को गई थी इस से हाथ पांव धोए हैं यही ठंढे होनेका कारण है मैं उत्तर पा के चुप होरहा और इस की बात सत्य मानी कितेक दिन बीते फिर एक दिन वही दशा देखी तो उस दिन भी इस ने वही उत्तर दिया परन्तु मेरे मन में चोर धस गया कि निस्संन्देह यह रात को कहीं जाती है परन्तु इस बात को मैंने अपने मन ही में रक्खा किस हेतु से कि जो मैं इस बात को प्रगट करूं और झूंठ ठहरे तो हंसी ही होगी सो हे पथिक इस के निर्णय के लिये प्रथम तो मैं अपनी घुड़साल में गया तो क्या देखता हूं कि जो मेरे निज के घोड़े थे वे ऐसे शीघ्रगामी थे कि वायु उन के पीछे पड़ी रहा करती थी सो ऐसे तन क्षीण और बल हीन हो गए हैं कि अपनी ठौर से चलना भी अति दुस्तर है और कितनों की पीठ लग गई है तब मैंने अश्वपों को बुलवा के बहुतों को तो केवल आंख ही दिखाई और बहुतों को कठिन दण्ड दिया तब उन में से एक ने मारे डर के कहा कि हे पृथ्वी नाथ जो जीव दान पाऊं तो कुछ एकान्त में कहूं मैंने कहा कि मैं तुझ को जीव दान दिया परन्तु सत्य २ बता तब उस ने कहा कि महाराज रात के समय पटरानी जिस का नाम गुल है शृंगार कर घुड़साल में आ आप के घोड़े पर

सवार होके कहीं जाती है और थोड़ी सी रात रहे फिर के आती है और घोड़ा घुड़साल में छोड़ महल में चली जाती है हे पथिक मैंने ज्यों ही उस से यह बात सुनी त्यों ही चित्तबुद्धि हरगई पर यह भेद जान ने के कारण मैं ने उस अश्वप से कहा कि आज एक घोड़ा और तैयार रखियो निदान ज्योंही रात हुई त्यों ही मैंने कुछ थोड़ा बहुत भोजन कर अपनी खाट जो तिस पीछे यह भी आ के मेरे निकट सो रही और छल सानी प्रीति दिखाय के बोली कि मुझे तो नींद ने आज अभी से सताया है और मैं भी जान बूझ के सोतों की भांति स्वास लेने लगा जब इस ने जाना कि यह सो रहा तब यथा पूर्वक मेरे पास से उठ दांतों में मिस्सी मल आभूषण पहन और नवीन वस्त्र धारण कर बाहर निकली मैं भी दबे पांव इस के पीछे २ निकला यह घुड़सार में आ के घोड़े पर सवार होके चली तब मैंने सोचा कि जो मैं घोड़े पर सवार होके इस के पीछे चलूं और इस को घोड़े की टाप की आहट मालूम हो जाय तो सचेत हो जायगी तब यह भेद कैसे खुलेगा इसलिये कमर कस के पैदलही इस के पीछे २ चला और यह जो कुत्ता जिस के गले में जड़ाऊ तौक देखता है मेरे साथही था जब थोड़ी सी दूर पै एक मैदान में ए जंगी जो मेरे सामने खड़े हैं मकान बना के रहते थे जब यह वहां पहुंची तब घोड़े से उतर जंगियों के घर में गई उन्होंने इस को घर के बाहर निकाल दिया और कोड़ा लेके निकले और इस हतभाग्य को मारते २ देही २ पिलपिली कर दी यह देख के मैंने जाना कि अब गुलमर गई क्योंकि मैंने तो फूल की भी छड़ी से गुल को कभी नहीं

मारी है और अब इस पै इतनी मार पड़ी है पर इस को तो देह में उ
न जंगियों की प्रीति का मद भरा था इसने चूं भी न किया और
उलटी उन के पावों पड़ने लगी अन्त को उन्होंने पूछा कि
आज देर को क्यों आई तब इस ने उत्तर दिया कि आज वा
ह भाग्य हतभाग्य देर तक जागता रहा इसी से आने में देरी हु
ई नहीं तो तभी आई होती यह देख के हे पथिक मुझे बड़ा आ
श्चर्य हुआ क्योंकि मैंने तो गुल को कभी फूल से भी नहीं
मारा है अब इस ने ऐसी कठिन मार कैसे सही है अन्त को जं
गी गुल का हाथ पकड़ घर में ले जाय इस के साथ भोग विला
स करने लगे यह दशा देख मेरा शरीर मारे क्रोध के भस्म हो
ने लगा और आंखों से ज्वाला प्रगट होने लगी तब मैं अधी
र होके उन के घर में घुस गया मुझे देखते ही जंगियों ने चा
रों ओर से टीड़ी दल समान घेर लिया पर मैं अपनी मनुसाई
और सामर्थ्य के भरोसे पै उस झुण्ड में जाने से तनक भी भय
मन में न धरी और उन से युद्ध करने लगा जब उन्होंने देखा कि
हम इससे जीत नहीं सक्ते तो वे लोग हटे और चारों ओर से भा
गने लगे और यह जंगी जिसको तू हाथ पांव बंधे देखता है
मेरे हाथ से बन्दि में आया जिस समय मैं इस को बांधने के
बिचार में था कि इतने में यह गुल आपदा की मूर्ति पीछे से
आई और मुझे ऐसे बल से धक्का मारा कि मैं पृथ्वी पर गिर पड़ा
उस समय यह जंगी सावकाश पाके मेरे ऊपर चढ़ बैठा
और इस निर्लज्ज ने अपनी कमर से छुरी निकाल के इस
जंगी को दे कर मेरे मारने को यत्न किया उस समय मैं अ
पने जीने से हाथ धो बैठा पर ईश्वर से प्रार्थना करता था कि

इतने में इस जंगी ने चाहा कि मेरी नाड़ पर छुरी रेत के वि-
दाई देय त्योंहीं इस कुत्ते ने जिसको तू ऐसी प्रतिष्ठा से देखता
है पीछे से आके इस जंगी का गला पकड़ लिया उस स-
मय मैं साव का आधा के नीचे से निकल इस जंगी की मुश्कें
चढ़ाईं और उसी के साथ गुल को कैद करके ले आया
और चार जंगी जो मेरे भय से भागे थे उन में से तीन को तो
पकड़ लाया पर एक भाग के महरंगेज़ नामक जो शाह के पू
स की बेटी है उस के तख़्त के नीचे छिपा है अब हे पथिक मैं
ने तेरे सामने सम्पूर्ण वृत्तान्त आद्योपांत कह सुनाया इस-
लिये तुझे भी उचित है कि तू भी अपने वचन का प्रतिपाल
न कर तब शाहज़ादे ने कहा कि जो आप मेरे मारने पै उद्य-
त हैं तो प्रथम यह तो बतलाइये कि वह जंगी जो भाग कर यहां
से गया है उस को महरंगेज़ ने किस वास्ते अपने तख़्त के नीचे
छिपा रक्खा है इसका ब्योरा भी मुझे पहिले बता दीजिये तो मुझे
बध कीजिये नहीं तो मेरी वृथा हत्या आपके माथे होगी तो
अंत के दिन परमेश्वर के आगे क्या उत्तर दोगे बादशाह तो कुछ
हाल महरंगेज़ का जानता हीन था इस लिये चुप हो रहा और शाह
ज़ादे के बध करने से हाथ उठाया तब शाहज़ादे की बुद्धिमानी की
प्रशंसा करने लगा कि धन्य तुझ को और तेरी माता को कि तूने
कैसी २ चतुराई से अपना जीव बचाया निदान जब
शाहज़ादा ऐसी २ कठिनता से शाह सनोबर से संपूर्ण
वृत्तान्त पूछ अपनी जान बचाया तब परमेश्वर का धन्य-
वाद कर बादशाह का जयजयकार मनाने लगा फिर थोड़े
दिन बाद शाह की सेवा में रह वहां से जन्मभूमि को आने का

विचार कर एक दिन नदी के तट पर आप स्नान कर सी मुर्ग का पंख जो उस के पास था आग पर धरा त्योंही सी मुर्ग जो उसका हितू था आ पहुंचा तब शाहज़ादे ने कितने एक जीवों को मार यथा पूर्वक खाने पीने की सामा इकट्ठी करके सी मुर्ग पर सवार हुआ और सातों महानदों को उतर कर सी मुर्ग के मकान पर आ पहुंचा फिर कुछ दिन सी मुर्ग के घर निवास कर वहां से विदा हो जंगियों के कोट में आया और वहां से जंगियों के बादशाह की बेटी को सम्पूर्ण द्रव्य सहित लेके उस बन में जहां सिंह से मिलाप हुआ था यथा पूर्वक उस से भी मिला॥

बारहवीं कहानी

जमीला खातूं के मकान पर पहुंच उस को साथ ले लतीफा बानू के राह देने की नति से आने और महरोज़ के प्रश्न का उत्तर देने के विषय में॥

लेखक यों लिखता है कि जब शाहज़ादा जमीला खातूं के मकान के निकट पहुंचा तब जमीला खातूं शाहज़ादे के आने के समाचार पाय उस को आगे लेने आई और शाहज़ादे को साथ लेके बाग में आ जैसी पहुनाई करना उचित था सो किया और शाहज़ादे ने अपने कहने के अनुसार उस के साथ विवाह कर कुछ दिन भोग विलास करके फिर जमीला खातूं को साथ ले लतीफा बानू के नगर की राह ली थोड़ी ही अवधि में अपनी सेना सहित लतीफा बानू के बाग में पाटम्बरी तम्बू को खड़ा किया तब कितने एक वीरों को आज्ञा दी कि लतीफा बानू को हमारे बाग के सन्मुख लावें और लोग मारा-

नुसार उस को शाहज़ादे के सन्मुख लाये उस समय शाहज़ादे का विचार था कि इस की खाल खींच के भुस भरवाना चाहिये अथवा इस को वध करके इसका मांस कुत्ता और चीलों को लुटाना चाहिये परन्तु जमीला खातूं जो उस की बहन थी उसने उस के निर्दय अपराध की क्षमा मांगी तब शाहज़ादे ने उस के कहने से उस का अपराध क्षमा किया और महम्मदी धर्म्म का उपदेश कर जादू की विद्या छुड़ाई और जितने मनुष्य उस ने अपनी माया के बल से हिरण बना रक्खे थे उन को यथा पूर्व के मनुष्य बनाया और उन को कपड़ा बनवाय राह का खर्च दे के बिदा किया वे सब जय जय कार मनाते निज २ देश को सिधारे तिस पीछे लतीफा बानू को वहां छोड़ महरंगेज़ के देश की राह ली एक मास पीछे के मूस शाह के शहर में आ पहुंचा और शहर के बाहर तम्बू खड़ा कर जमीला खातूं आदि को वहां छोड़ के आप महरंगेज़ के प्रश्न का उत्तर देने के विचार से उस के द्वार पर जा नगारा बजाया चट द्वारपालक शाहज़ादे को महरंगेज़ के पिता के पास ले गये तो बादशाह ने बहुत समझाया कि हे जवान तू इस कठिन काम को मत कर क्योंकि आज तक कोई उस के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका इसी से अनेक राज कुमार उस के हाथ से मारे गए और मुझे लखाई देता है कि तेरी भी मृत्यु शीश पर नाची है इसी से तू उस के प्रश्न का उत्तर देने को आया है तब शाहज़ादे ने कहा हे बादशाह आज तक उस भेद को जो तेरी बेटी पूछती है कोई नहीं जानता था अब मैं केवल उसी के उत्तर देने के लिये आया हूं जब समाचार यह महरंगेज़ को

पहुंचा तब उसने शाहज़ादे को बुलाया शाहज़ादे ने कहा कि
हे महरंगेज़ तेरा प्रश्न क्या है उसने कहा कि बतावो गुल्ल ने
सनोबर के साथ क्या किया तब शाहज़ादे ने कहा कि हे म
हरंगेज़ जो गुल्ल ने किया उस का बदला भली भांति लिया था
और तू भी उसी भांति पछतायगी यह सुनते ही उसके मन
में चोर धसि गया परन्तु लाज छोड़ इस कहानी के सुनने
की अभिलाष से ढिठाई से बोली कि हे शाहज़ादे जब तक
तू सम्पूर्ण वृत्तान्त आद्योपान्त न कह सुनावैगा तब तक
मैं नहीं मानूंगी जब शाहज़ादे ने देखा कि यह निर्लज्ज अप
ने अपराध को नहीं मानती वृथा वाद किये जाती है तब शा
हज़ादे ने कहा कि हे महरंगेज़ जो तेरे मन में इस कहानी
के सुनने की अभिलाष है तो अपने पिता को भी सभासदों
सहित बुलवा वो सभा के सन्मुख सम्पूर्ण कहानी कह
सुनाऊं महरंगेज़ ने वैसा ही किया जब बादशाह अपने
सभासदों सहित आके वहां शोभित हुआ तब शाहज़ा
दे ने कहा कि हे महरंगेज़ अभी तेरा कुछ नहीं बिगड़ा
क्योंकि जब तेरे प्रश्न का उत्तर दूंगा तो तेरे मन आवेगी सो
तेरी गति करूंगा महरंगेज़ ने अपने बाप के सामने यह
भी मानी तब शाहज़ादे ने कहा कि हे सभासदो आज त
क इस भेद को कोई नहीं जानता था परन्तु अब मैं तुम्हारे सामने क
हता हूं परन्तु तुम इस से इतनी बात पूछो कि इसने यह बात कहां
से सुनी है कि जिस के लिये अनेक राजकुमारों को वध किया
है सभासदों ने जब यह बात पूछी तब इसके प्रति उत्तर में उ
सने मौन साधी तब शाहज़ादे ने कहा कि हे महरंगेज़ मैं गुल्ल

सनोबर का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानता हूं परन्तु तुझे इस के सत्य अ
सत्य का निश्चय कैसे होगा इस लिये जिस से तैंने सुना है
उस को बुला के यहां बैठाल जिस्में वह मेरे और तेरे बीच
मे साक्षी हो तब महरंगेज़ ने कहा कि मैंने तो यह एक पथि
क से सुना है अब मैं उस को कहां से लाऊं यह सुन शाहज़ा
दे ने क्रोध करके कहा कि जो मैं उस पथिक को लेके बैठालूं
तो क्या होवे महरंगेज़ ने कहा कि इस से और कौन बात उत्तम
है तब शाहज़ादे ने कैमूस शाह का हाथ पकड़ कर महरंगेज़ के
तख़्त के पास लाय खड़ा किया और उस तख़्त के हटाने की आ
ज्ञा दी उस सिंहासन के उठाते ही वह जंगी जो उस ने छिपाय
रक्खा था निकल आया शाहज़ादे ने उस को बांध लिया औ
र कैमूस शाह यह देख अपने सभासदों सहित मारे लाज के
पसीने में डूब गया परन्तु महरंगेज़ निर्लज्जता की चादर
ओढ़ ढिठाई का घूंघट काढ़ बैठी सभा मध्य में वही बात क
रती रही थी कि (बारी भद्दल पश्यति) अर्थात् अपने हठ
से कहे जाती थी कि गुल ने सनोबर के साथ क्या
किया तब शाहज़ादे ने कहा कि बड़े आश्चर्य की
बात है कि तेरी आंखों में तनक भी लाज नहीं है तब
हार कर शाहज़ादे ने जंगी को सभा में बैठाल कर स
म्पूर्ण वृत्तान्त गुल के पाने और जो जो दुष्टता गु
ल ने सनोवर शाह के साथ किया सो और जो सनो
बर शाह ने उस की दुष्टता के पलटे में दण्ड दिया
और जिस कठिनता से शाहज़ादा शहर वाकाफ
मे पहुंचा और जैसे उस की सेवा में गया सो सब आदो

पान्त कह सुना था तब उस जंगी ने कहा कि हे शाह ज़ादे तैं ने बहुत ही ठीक कहा है इस्में कुछ भी झूंठ नहीं है तब शाह क़ैमूस ने शाह ज़ादे की बुद्धिमानी और मनुसाई की अधिक २ प्रशन्सा की और शाह ज़ादा भी बादशाह की दया अपने ऊपर देख के प्रसन्न हुआ तब शाह क़ैमूस ने अपनी बेटी का उसी समय शाहज़ादे को हाथ पकड़ा दिया ॥

तेरहवीं कहानी

महरंगेज़ सहित शाहज़ादे का देश को आना और अपने बाप से सम्पूर्ण वृत्तान्त कहके जंगी को दण्ड दे महरंगेज़ के साथ बिवाह करने के बिषय में

निदान शाहज़ादा थोड़े दिन वहां रह स्वसुर जामात्र के नाते की रीति भांति से छुट्टी पाय क़ैमूस शाह से बिदा हो उस हबसी सहित महरंगेज़ और जमीला खातून को लेके अपने देश को चलता भया और थोड़े ही दिनों में ईश्वर की दया से अपने नगर में आ पहुंचा तब यह शुभ समाचार बादशाह लाल पोश अर्थात् शाह ज़ादे इलमासरूह बख़्श के पिता ने सुने तब उस की बिपत्ति निशा सिरानी और आनन्द रूपी सूर्य्योदय हुआ और जिन के उस की बिरह में नयन मेघ समान बर्षते थे उन को यह शुभ सन्देश अगस्त के समान हुआ और जो उस के बिरह में तन क्षीण मन मलीन रहते थे तिनके प्राणों को पथ्य सुधा समान भास हुआ और सम्पूर्ण नगर में आनन्द बधाई बाजी घर २ मंगल चार होने लगे

और बादशाह ने ऐसा पुरुष किया कि दीन धनी और या-
चक अयाचक हो गए जब शाहज़ादा बादशाह के पास
गया तब यद्यपि बादशाह एक तो वृद्ध दूसरे पुत्र की वि
रह के कारण ऐसा बल हीन था कि उठने को भी साम
र्थ्य न थी तद्यपि पुत्र को देख डगमगाते हुए उठ के शा
हज़ादे को छाती से लगा के बहुत रोदन करने और बा
र बार गात चूमने लगा तब शाहज़ादे ने अपने पिता
को दण्डवत कर बहु प्रकार दर्शन कर चित्त संतुष्ट कि
या और बादशाह जो रोते २ अन्धा हो गया था सो शा
हज़ादे ने सुर्मा सी मुर्ग के पास वाला आंखों में लगा-
या तत्काल दृष्टि यथा पूर्वक हो गई और सत्य तो यों
है कि पुत्र ही माता पिता के नेत्र हैं फिर शाहज़ादे ने स-
म्पूर्ण वृत्तान्त लतीफा बानू की माया का करना औ-
र जमीला खातूं की प्रीत का और जोगियों का युद्ध सी
मुर्ग की सहायता सिंह की मित्रता शहर वा काफ में जा
के सनोबर शाह की सेवा में पहुंच के गुल सनोबर की क
हानी जानना फिर वहां से आके महरंगेज़ के पिता को स-
भा मध्य में लज्जित कर महरंगेज़ के लाने का आद्योपान्त
सब वृत्तान्त कह सुनाया तब बादशाह शाहज़ादे की बु-
द्धिमानी और वीरता की बड़ाई करने लगा फिर शाहज़ा-
दे ने महरंगेज़ के हाथ पांव बांध के बादशाह के आगे ला
के कहा कि इस कुटिल ने आप के पुत्रों को बध किया है सो
आप इस को जिस प्रकार चाहिये दण्ड दे के बध की जि-
ये तब बादशाह ने देखा कि मृतक पुत्र तो अब इस के बध

करने से फिर न आवेंगे और यह इस को कितनी विपत्ति भो-
ग के लाया है जो मैं कोई दण्ड इस को करूं तो शाहज़ादे के
मन को उदासी होगी इस बिचार से बाद शाह ने कहा कि
यह तेरा भाग्य है किस हेतु से कि सदा किसी का समय एक
सा नहीं रहता तब शाहज़ादे ने चार घोड़े घुड़साल से
मंगवाये और उस जंगी को चार खूटों में बंधवा के कोड़ों से
पिटवाया जब उस के देह की खाल उड़ गई तब घोड़ों की टा-
पों के नीचे खुंदवाया जब महरंगेज़ ने यह दशा हबशी की
देखी तो मारे डर के कांपने लगी कि अब यह मुझे भी सजी
वन छोड़ेगा तब महरंगेज़ ने यह बात अपनी बुद्धिमानी से
बना के कही कि हे शाहज़ादे जिस वस्तु को मनुष्य बहुत
सी विपत्ति भोग के लावे तो उस को उचित है कि उस को
हिल कर रक्खे और जो तुम्हारे भाई और जितने अन्य पु-
रुष मेरे हाथ से बध हुये इस को केवल ईश्वर की इच्छा
जानना चाहिये और जो ऐसा न होता तो भला तुम उस ठौ-
र कैसे पहुंचते और यह किस की सामर्थ्य थी जो इस जं-
गी को मेरे तख़्त के नीचे से निकालता और मेरा हाथ पकड़
लेता और जो तुम्हारे मन में मेरी भ्रष्टता के विषय में कुछ
सन्देह हो सो सब भांति अपने मन को समाधान कर लेव
यह सुन शाहज़ादे ने जाना कि यह डरती भी है और उस
की बुद्धिमानी से प्रसन्न हो के उस के अपराध को क्षमा
किया और एक दिन शुभ मुहूर्त देख के महरंगेज़ के सा-
थ विवाह कर अपनी आयु के शेष दिन उस के साथ
आनन्द से बिताये ॥ ५ ॥ इति ॥ ५ ॥